TITLE CODE : UPMUL00792

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लोक पहल

शाहजहाँपुर, शनिवार 07 जनवरी 2023

शाहजहाँपुर से प्रकाशित

वर्ष :1, अंक :43 पृष्ठ :8, मूल्य 2 रुपये

संक्षेप

नफरत की जमीन पर बन रहा राम मंदिरः जगदानंद सिंह

पटना एजेंसी। राष्ट्रीय जनता दल के प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह ने कहा कि भारत की भूमि राम और कृष्णमय मानी जाती थी। अब सब खत्म हो गया है। अब राम रामायण से भाग जाएंगे। कण–कण से हट जाएंगे। यह भारत राम का नहीं रहेगा। केवल एक मंदिर राम का रहेगा। नफरत की जमीन पर राम के मंदिर का निर्माण हो रहा है। राम उसी एक मंदिर में बैठ जाएंगे। पत्थरों के बीच रहेंगे, हृदय के बीच में नहीं रहेंगे। आरएसएस वाले यही कर रहे हैं। हम तो हे राम वाले हैं, जय श्री राम वाले नहीं। हमारे राम तो भारत के राम भारत के कण–कण में रहेंगे, आरएसएस वालों के राम जहां–जहां बैठें!

उन्होंने कहा भारत के कण–कण से सिमट कर पत्थरों की चारदीवारी में राम को कैद किया जा रहा है।

चीन के युवा खुद ही हो रहे कोरोना संक्रमित

नई दिल्ली एजेंसी। चीन ने देश में कोरोना विस्फोट के बीच अंतरराष्ट्रीय यात्रियों के लिए सीमाएं खोल दी हैं। इससे देश में उत्साह का माहौल है। घूमने फिरने के शौकीन युवाओं में कोविड का भय नहीं है। वे खुद को इस उम्मीद में कोविड संक्रमित कर रहे हैं, ताकि उनमें कोरोना प्रतिरोधक क्षमता आ जाए।

जीरो कोविड पॉलिसी में ढील का अंजाम भोगने और देश में लाखों की तादाद में संक्रमित मिलने के बावजूद चीन ने सीमाएं खोलने का कदम उठाया। वहीं, अस्पतालों में न डॉक्टर मिल रहे हैं और न ही एंबुलेंस और न ही बेड। बुजुर्गों की जान सांसत में है।

दूसरी ओर घूमने फिरने की आजादी मिलने से युवा खुद कोविड संक्रमण की जोखिम ले रहे हैं। उनका मानना है कि इससे वे कोविड के खिलाफ इम्युनिटी हासिल कर लें और बार–बार होने वाले संक्रमण से बच जाएं। इससे उनके परिवार में रहने वाले लोगों के लिए संक्रमित होने का खतरा कम हो जाएगा।

जी–20 के अतिथियों का यूपी में होगा भव्य स्वागत

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देशन में तैयारियां शुरु

लोक पहल

लखनऊ। भारत इस वर्ष जी–20 देशों की अगुवाई कर रहा है उत्तर प्रदेश में जी–20 का सम्मेलन होने जा रहा है इसके लिए सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपनी अगुवाई में तैयारियों को अन्तिम रूप देना शुरू कर दिया है। दुनिया की 60 फीसदी आबादी, 80 प्रतिशत अर्थव्यवस्था और 75 प्रतिशत विश्व व्यापार पर नियंत्रण रखने वाले 20 देशों के समूह के 11 सम्मेलन प्रदेश के विभिन्न शहरों में होंगे। दुनिया के दिग्गज राष्ट्रों से आने वाले अतिथियों के स्वागत के लिए यूपी में तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिया है कि इनके आतिथ्य में कहीं कोई कमी नहीं होनी चाहिए।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अधिकारियों को दिए निर्देश में कहा है कि उत्तर प्रदेश में जी–20 सम्मेलन हमारे पास बड़े अवसर के रूप में आया है।

इस विशेष अवसर का लाभ शहरी इंफ्रास्ट्रक्चर को और ज्यादा आधुनिक बनाने में करें। सम्मेलन वाले शहरों में यातायात व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ बनाना होगा। विदेशों से आने वाले अतिथि उत्तर प्रदेश से सुखद और यादगार अनुभव लेकर जाएं, इसके लिए सभी जरूरी आयोजनों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की पूरी रूपरेखा तैयार करते हुए तैयारियों को अंतिम रूप देने का कार्य जल्द करें।

प्रदेश की कला, संस्कृति और विरासत को दुनिया के सामने प्रस्तुत करने का जी–20 बड़ा मंच होगा।

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिया है कि खान–पान से संबंधित स्थानीय व्यंजनों का चयन करने के साथ ही अलग–अलग देशों से आने वाले अतिथियों की पसंद का भी ध्यान रखा जाए। इसके अलावा अतिथियों को भेंट देने के लिए ओडीओपी के उपहारों को वरीयता दी जाए। अतिथियों की सुरक्षा का विशेष ध्यान रखा जाए। एयरपोर्ट, सड़क, सार्वजनिक स्थानों, होटल आदि में अतिथियों के सत्कार के लिए विशेष तौर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम और स्थानीय नृत्य–कलाओं का प्रदर्शन किया जाए। इसके अलावा अतिथियों को हाईस्पीड इंटरनेट सुविधा उपलब्ध कराई जाए।

यूपी में भारत जोड़ो यात्रा में राहुल गांधी ने कई मुद्दों पर सरकार को घेरा

बोले–मेरी टी-शर्ट पर नहीं, गरीब के फटे कपड़ों पर हो देश में चर्चा

लोक पहल

लखनऊ। पश्चिम यूपी में भारत जोड़ो यात्रा के दौरान राहुल गांधी ने बागपत में मोदी सरकार के 'न्यू इंडिया' पर जमकर निशाना साधा। विभिन्न स्थानों पर आयोजित सभाओं को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने लोगों के स्नेह और अपने ऊपर बरसाए गए 'प्यार' के लिए उनको धन्यवाद दिया। उन्होंने अग्निवीरों की समस्या को उठाते हुए कहा, 'पहले युवा 15 साल सेना में नौकरी करते थे और पेंशन पाते थे लेकिन नरेंद्र मोदी ने सोचा कि पेंशन को अलग रखा जाए, 6 महीने ट्रेनिंग करें, फिर बंदूक पकड़ लें, 4 साल नौकरी में रहें, फिर आपको बाहर निकाल दिया जाएगा। इसके बाद आप बेरोजगार हो जाएंगे। यह न्यू इंडिया है।

कांग्रेस नेता ने कहा, 'इसके बाद जब युवा सड़कों पर उतरते हैं तो मोदी जी ने कहा कि अगर (विरोध के दौरान) आपकी फोटो खींची गई तो आपको सरकारी नौकरी नहीं मिल पाएगी। बीजेपी की नीति युवाओं, किसानों और मजदूरों को डराने की है।

उन्होंने कहा पश्चिम यूपी में किसान लंबे समय से गन्ने के बकाये की समस्या से जूझ रहे हैं, लेकिन सरकार पर कोई फर्क नहीं पड़ रहा है। उन्होंने कहा पश्चिम यूपी यानी गन्ना बेल्ट में यह एक गंभीर समस्या। ये करोड़ों रुपये तक है। राहुल ने बढ़ती कीमतों, 'बढ़ती बेरोजगारी' को लेकर भी सरकार को घेरा। राहुल गांधी ने कहा, 'मैं (भारत जोड़ो) यात्रा में टी–शर्ट पहनकर चलता हूं। यात्रा में मेरे साथ गरीब किसान मजदूरों के कई बच्चे फटे कपड़े पहनकर चलते हैं, लेकिन मिडिया यह नहीं पूछता कि सर्दी के मौसम में गरीब किसानों और मजदूरों के बच्चे बिना स्वेटर/जैकेट के क्यों चल रहे हैं। मेरी टी–शर्ट पर सवाल असली मुद्दा नहीं है, लेकिन भारत के बच्चों, किसानों और मजदूरों का सर्दियों में बिना गर्म कपड़ों के घूमना असली मुद्दा है।

शाहजहांपुर के के. आर. ग्रुप का फर्टिलाइजर के क्षेत्र में प्रवेश

इफ्को के साथ हुआ करार, प्रतिदिन डेढ़ लाख बोतल तरल यूरिया का होगा उत्पादन

तरल यूरिया बनाने वाला देश का पहला निजी समूह बना केआर ग्रुप

लोक पहल

शाहजहांपुर। आज शाहजहांपुर स्थित उत्तर प्रदेश के प्रतिष्ठित औद्योगिक समूह के आर ग्रुप ने देश के किसानों के हित में एक क्रांतिकारी आगाज किया है देश की प्रतिष्ठित उर्वरक कंपनी इफको ने शाहजहांपुर के उद्योगपति माधोगोपाल अग्रवाल (नैनो फर्टिलाइजर्स प्राइवेट लिमिटेड) के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं नैनो फर्टिलाइजर्स के लिए समर्पित एक नई कंपनी नैनो यूरिया (तरल) उर्वरक की प्रत्येक 500 मिलीलीटर बोतल की 1,50,000 बोतलों के निर्माण करेगी, जिसके तहत डेढ़ लाख बोतल नैनो यूरिया की प्रतिदिन क्षमता के हिसाब से इफको लिमिटेड और नैनो फएमओयू साइन किया गया है इफको के अलावा नैनो यूरिया बनाने का यह पूरे देश का पहला प्राइवेट औद्योगिक प्रतिष्ठान होगा!

इस उद्योग को लगाने में लगभग 200 करोड़ का निवेश होगा, उक्त जानकारी देते हुए समूह के चेयरमैन माधो गोपाल अग्रवाल एवं प्रबंध निदेशक अर्जुन अग्रवाल ने बताया कि इस कंपनी से जहाँ एक ओर देश के किसानों को लाभ होगा वहीं दूसरी ओर शाहजहांपुर में युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ेंगे।

भाजपा का राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा या कोई और ?

- **भाजपा में राष्ट्रीय अध्यक्ष की कुर्सी को लेकर मंथन शुरू**
- **२० जनवरी को राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में हो सकता है नाम का ऐलान**

लोक पहल

नई दिल्ली। 20 जनवरी को भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा का कार्यकाल पूरा हो जायेगा। ऐसे में राजनीतिक गलियारों में इस बात की चर्चा शुरु हो गई है कि भाजपा का अगला अध्यक्ष कौन होगा? क्या भाजपा जेपी नड्डा पर ही विश्वास जताते हुए 2024 के रण में उतरेगी या इस बार कोई और चेहरा भाजपा की कमान संभालेगा। भाजपा का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने की रेस में कई नाम सामने आ रहे हैं। वहीं, कयास इस बात के भी लगाए जा रहे हैं कि जेपी नड्डा के कार्यकाल को बढ़ाते हुए एक बार फिर उन्हीं को अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है। दरअसल, इस वर्ष 9 राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं और इसके ठीक बाद 2024 का लोकसभा चुनाव भी होना है। ऐसे में भारतीय जनता पार्टी किसी प्रकार का जोखिम लेना नहीं चाहेगी।

बीजेपी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक इसी महीने होने वाली है। इस बात की संभावना है कि इस बैठक में पार्टी अपने अगले अध्यक्ष के नाम की घोषणा कर दे। अब सवाल ये है कि अगर नड्डा के कार्यकाल का विस्तार नहीं होता है तो फिर पार्टी किस पर दांव लगाएगी। कौन होगा बीजेपी का अगला अध्यक्ष?

जेपी नड्डा एक ऐसे अध्यक्ष रहे हैं जो लगभग सभी राज्यों में खुद को फिट कर लेते हैं। ऐसे में बहुत संभावना है कि उन्हें ही अध्यक्ष पद पर बरकरार रखा जाए। हालांकि, उनकी जगह किसी और को चुनना पड़ा तो पार्टी शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को कमान सौंपने की सोच सकती है। राजस्थान में इस वर्ष चुनाव होने हैं ऐसे में बीजेपी, धर्मेंद्र प्रधान के अलावा पार्टी भूपेंद्र यादव को भी पार्टी का अध्यक्ष बना सकती है। राज्यसभा सांसद और केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव पिछली बार भी अध्यक्ष पद के बड़े दावेदार माने जा रहे थे। चुनावों से पहले पार्टी संगठनात्मक स्तर पर भी बड़े बदलाव कर सकती है। जानकारी के मुताबिक इन बदलावों का आधार आगामी विधानसभा चुनाव और लोकसभा चुनाव रह सकता है। पार्टी के कई बड़े मंत्रियों को उनके चुनावी राज्य में जिम्मेदारी दी जा सकती है।

गीतकार कमल मानव 'सर्जना पुरस्कार' से सम्मानित

लोक पहल

शाहजहांपुर। हिंदी संस्थान के 46 वें स्थापना दिवस पर शहर के गीतकार कमल किशोर मिश्र (कमल मानव) को सर्जना पुरस्कार दिया गया। यह पुरस्कार उनके गीत संग्रह 'चंद्रमा के मधु शिविर में' के लिए दिया गया। लखनऊ के यशपाल सभागार में संस्थान की प्रधान संपादक डा0 अमिता दुबे के संचालन में वरिष्ठ साहित्यकार डा0 राम कठिन सिंह, वरिष्ठ कथाकार डा0 सुधाकर अदीब व संस्थान के निदेशक आरपी सिंह द्वारा उन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार में 40000 रुपये, प्रशस्तिपत्र व अंगवस्त्र प्रदान किया गया।

शहर के सिंजई मोहल्ला निवासी कमल मानव मूलरूप से ददरौल ब्लाक के अख्तियारपुर बधौरा गाँव के निवासी हैं तथा ग्राम। विकास विभाग से सेवानिवृत्त हैं। 45 वर्ष से उनकी रचनाएं विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। चंद्रमा के मधु शिविर में उनका प्रथम काव्य संग्रह है। कमल मानव के अनुसार इसमें अध्यात्म, प्रेम और सामाजिक सरोकारों पर लिखे गए 50 गीत हैं।

उनके इस पुरस्कार मिलने पर प्रवाह साहित्यिक संस्थान के पदाधिकारियों के अलावा स्थानीय साहित्यकार ज्ञानेंद्र मोहन ज्ञान, सुशील दीक्षित विचित्र, डा0 प्रशांत अग्निहोत्री, डा0 राजीव सिंह, बृजेश मिश्र, उमेश चंद्र सिंह, कुलदीप दीपक, सरोज मिश्र, लालित्य पल्लव, अरुण दीक्षित, चंद्र शेखर दीक्षित, विजय ठाकुर, चंद्र मोहन पाठक, पीयूष शर्मा, इशरत सग़ीर, विकास सोनी ऋतुराज, विकास शर्मा पारस आदि ने बधाई दी है।

नियमित टीकाकरण न होने पर डीएम ने जताई नाराजगी

लोक पहल

शाहजहांपुर। जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में जिला टास्कफोर्स की बैठक सम्पन्न हुयी। बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने नियमित टीकाकरण में खराब प्रदर्शन पर कलान, कांट, मदनापुर एवं निगोही के प्रभारी चिकित्साधिकारियों को नोटिस जारी करने के निर्देश दिये। उन्होने कहा कि सुधार न होने पर इन प्रभारी चिकित्साधिकारियों के विरूद्व कठोर दण्डात्मक कार्यवाही हेतु शासन को संस्तुति प्रेषित की जायेगी। नगर क्षेत्र में भी नियमित टीकाकरण में सुधार हेतु

जिलाधिकारी ने निर्देश दिये। उन्होने डीसीपीएम को नोटिस जारी करने के भी निर्देश दिये तथा काम न करने वाली आशाओं की सूची प्रस्तुत करने के निर्देश दिये। नियमित टीकाकरण सत्रों में अनुपस्थित रहने वाली सभी एएनएम को चिन्हित करते हुये उनके विरूद्ध कार्यवाही हेतु निर्देशित किया। खराब प्रगति एवं उचित ड्रेस में बैठक में न आने पर बीसीपीएम कलान को नोटिस जारी करने के निर्देश देते हुये चेतावनी दी कि कार्य में सुधार न होने पर सेवा समाप्त की जायेगी। मीजल्स रूवेला के विशेष

सांसद मिथिलेश कुमार ने किसानों को बताये मोटे अनाज के फायदे

लोक पहल

शाहजहांपुर। मोटे अनाजों को बढ़ावा देने के लिए इस वर्ष पूरे विश्व में अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष 2023 मनाया जा रहा है। इस कार्यक्रम के तहत देश की संसद भवन परिषद में भी 'मिलेट्स भोज कार्यक्रम' का आयोजन भी किया गया था। जिसको प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित केंद्रीय मंत्रीगणों एवं लोकसभा और राज्यसभा के सांसदगणों ने काफी सराहा। इसी के चलते राज्यसभा सांसद मिथिलेश कुमार कठेरिया के पुवायां स्थित आवास कार्यालय पर आए किसान यूनियन के पदाधिकारियों कार्यकर्ताओं तथा किसान भाइयों को सांसद राज्यसभा मिथिलेश कुमार

कठेरिया ने मोटे अनाज के फायदे के विषय में अवगत कराया। इस दौरान उन्होंने किसान भाइयों को बताया कि जल्द ही जिला स्तर पर मोटे अनाज से होने वाले फायदे को लेकर एक संगोष्ठी का भी आयोजन करवाया जायेगा। उन्होंने बताया कि देश में मोटे अनाज की मांग बढ़ी है इसकी एक बड़ी वजह है सेहत भी है। मोटे अनाज की फसल को उगाने के फायदा यह भी है कि इसमें ज्यादा पानी की जरूरत नहीं होती है और यह पानी की कमी होने पर खराब भी नहीं होता है। और ज्यादा बारिश होने पर भी इसे नुकसान नहीं होता है। मोटे अनाज में कैल्शियम, आयरन, जिंक, फास्फोरस, मैग्नीशियम, पोटेशियम, विटामिंस आदि तत्व काफी मात्रा में पाए जाते हैं। जोकि शरीर को अनेकों प्रकार से फायदे पहुंचाते हैं। इस दौरान भारतीय किसान यूनियन के अध्यक्ष कमल सिंह, विमल वर्मा, शिव कुमार दीक्षित, राजकुमार, सोबरन, हरजिंदर सिंह, श्याम मनोहर सिंह सहित किसान मौजूद रहे।

नये साल में केआर पेपर्स ने दिया जरुरतमंदों को तोहफा, बांटे दो हजार कंबल

बच्चों की पढ़ाई का खर्च उठाने की प्रबंध निदेशक ने की घोषणा

लोक पहल

शाहजहांपुर। नववर्ष पर कड़कड़ाती ठंड में केआर पेपर्स ने जरुरतमंद लोगों को कबंल वितरित नये साल का तोहफा दिया। जलालाबाद रोड स्थित फैक्ट्री परिसर में आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि ददरौल विधायक मानवेन्द्र सिंह व कंपनी के प्रबंध निदेशक माधो गोपाल अग्रवाल ने जमौर, रामपुरा, इकनौरा, पिपरौला, मुदिगवा, जिगनेरा, बरुआ, अजीजपुर सहित तमाम गावों के करीब दो हजार लोगों को कबंल वितरित किये। इस मौके पर मुख्य अतिथि विधायक मानवेन्द्र सिंह ने कहा कि केआर पेपर्स के मालिक हमेशा जरुरतमंद लोगों का सहयोग करने को तत्पर रहते हैं, कंपनी रोजगार और राजस्व देने के साथ ही शौचालय निर्माण, विद्यालय में फर्नीचर, गरीब बच्चों की पढ़ाई, सिलाई प्रशिक्षण, निशुल्क दवा वितरण आदि सामाजिक कार्यो में भी अग्रणी रहती है, इस मौके पर कंपनी के प्रबंध निदेशक माधो गोपाल अग्रवाल ने सभी ग्रामवासियों से बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देने का आग्रह किया और घोषणा की कि बच्चों को स्कूल भेजें उनकी पढ़ाई का पूरा खर्च कंपनी वहन करेगी। इस मौके पर विभिन्न गावों के प्रधानों को सम्मानित भी किया गया, इस अवसर पर कंपनी के निदेशक राजगोपाल अग्रवाल, गोपाल अग्रवाल सहित कंपनी के तमाम अधिकारी और कर्मचारी मौजूद रहे।

एसएस कालेज की दिव्यांशी मिश्रा, अर्चना गुप्ता व अंशिका वर्मा को राज्यपाल ने किया सम्मानित

लोक पहल

शाहजहांपुर। एसएस कालेज की परा स्नातक संवर्ग की तीन छात्राओ दिव्यांशी मिश्रा, अर्चना गुप्ता तथा अंशिका वर्मा को क्रमशः इतिहास, गृह विज्ञान तथा फाइनेंस में पूरे विश्व विद्यालय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर विश्व विद्यालय परिसर में आयोजित दीक्षांत समारोह में उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने गोल्ड मेडल देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर कालेज प्राचार्य डॉ राकेश कुमार आजाद, उप प्राचार्य डॉ अनुराग अग्रवाल, डॉ धर्मवीर परमार, डॉ अमित गुप्ता, डॉ अंजु अग्निहोत्री, डॉ दीपक सिंह, डॉ कविता भटनागर, डॉ पद्मजा मौजूद रही। छात्राओ की इस उपलब्धि पर कालेज सचिव डॉ अवनीश मिश्रा, कला संकाय प्रभारी डॉ आलोक मिश्रा, इतिहास विभाग अध्यक्ष डा विकास खुराना, डॉ प्रभात शुक्ला, डॉ देवेंद्र सिंह, डॉ मधुकर श्याम शुक्ला, डॉ पूनम, डॉ आदित्य कुमार सिंह, डॉ आदर्श पांडे, डॉ शिशिर शुक्ला ने प्रसन्नता व्यक्त की।

सड़क सुरक्षा सप्ताह का हुआ शुभारंभ

लोक पहल

शाहजहांपुर। 5 जनवरी से 4 फरवरी तक चलने वाला सड़क सुरक्षा माह का शुभारंभ परिवहन कार्यालय के परिसर में जागरूकता वाहन को एडीएम वित्त ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान एडीएम वित्त ने कहा सड़क सुरक्षा मानव जीवन से संबंधित एक गंभीर मुद्दा है, जितनी 1 वर्ष में दुर्घटना से मृत्यु होती है उतनी कोविड–19 से 3 वर्ष में भी मृत्यु नहीं हुई है। उन्होंने बताया डीएम का स्पष्ट निर्देश है कि सड़क सुरक्षा से संबंधित समस्त अधिकारी आपस में समन्वय स्थापित कर सड़क सुरक्षा के संबंध में गंभीरता से प्रयास करें अन्यथा उत्तरदायित्व निर्धारित किया जाएगा। विद्यालयों में कार्यक्रम करा कर, चौराहों में पीएस सिस्टम चालू करा कर एवं मीडिया में व्यापक प्रचार प्रसार कर लोगों को जागरूक करें। पुलिस एवं परिवहन विभाग वाहनों की चेकिंग सुनिश्चित करें, यातायात नियमों का पालन ना करने पर जुर्माना लगाएं। इस दौरान एआरटीओ शांति भूषण पांडेय, क्षेत्राधिकारी यातायात, अधिशासी अभियंता लोक निर्माण विभाग सहित सड़क सुरक्षा से संबंधित अधिकारी, बीजेपी नेता सुबोध मिश्रा उपस्थित रहे।

शरीर में ऊर्जा संतुलन बनाने का काम करती है पोलेरिटी

श्री रामचंद्र मिशन आश्रम में पोलेरिटी पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। श्री रामचंद्र मिशन और हार्टफुलनेस इंस्टीट्यूट की ओर से पोलैरिटी (ध्रुवियता) पर एक तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्री रामचंद्र मिशन आश्रम में आयोजित कार्यशाला के शुभारंभ करते हुए मिशन के जोन प्रभारी दीपक त्यागी ने कहा कि ध्रुवियता दो प्रकार की होती है सकारात्मक और नकारात्मक, सकारात्मक संदर्भों में प्रकट होने वाली ध्रुवीयता को सकारात्मक ध्रुवीयता और नकारात्मक संदर्भों में प्रकट होता है वह एक नकारात्मक ध्रुवीयता है। श्री रामचंद्र मिशन के अध्यक्ष और हार्टफुलनेस इंस्टीट्यूट के ग्लोबल गाइड पूज्य कमलेश पटेल 'दाजी' ने इस प्राचीन पद्धति को जन सामान्य के लिए सुलभ बनाने का काम किया है इसके प्रयोग से व्यक्ति अपने जीवन में तमाम तरह के विकारों से मुक्ति पा सकता है,

कार्यशाला को संबोधित करते हुए कानपुर से आये प्रशिक्षक निरंकार सिंह चौहान ने बताया कि ध्रुवीयता एक एक तरीका है जिससे हम अपने शरीर की प्राणमय ऊर्जा को संतुलित कर सकते हैं, इस क्रिया में एक दाता होता है और एक ग्राही, दाता अपने हाथों से ग्राही को बिना छुये ऊर्जा को संप्रेषित करता है, अलीगढ़ से आये प्रशिक्षक हेमंत कुमार ने कहा कि पोलेरिटी कोई थेरिपी, चिकित्सीय पद्धति या दवा का विकल्प नहीं है, इस प्राचीन पद्धति में प्राणमय कोष में जब ऊर्जा असंतुलित हो जाती है तो शरीर में सर्दी, जुकाम, माइग्रेन, अनिद्रा, डिप्रेशन, नसों में ब्लाकेज, चिड़चिड़ापन, गुस्सा जैसे विकार उत्पन्न हो जाते इस पद्धति के अभ्यास से इन विकारों पर जल्द काबू पाया जा सकता है पोलेरिटी प्राण मय कोष की ऊर्जा का संतुलन करती है। हार्टफुलनेस की इस आध्यात्मिक पद्धति के कई सारे शारीरिक लाभ होने के साथ ही यह हमारे आध्यात्मिक विकास में भी सहायक है। कार्यशाला उत्तर प्रदेश के करीब 150 लोगों ने प्रतिभाग किया। कार्यशाला में गोला की नीलम सेठ व पूनम जायसवाल ने बहनों को प्रशिक्षण दिया। आयोजन में कुंवर जी सेठ, सुयश सिन्हा, अजीत कुमार, कृष्णा भारद्वाज, रवि बाधवानी, संजय सक्सेना, आदि का विशेष सहयोग रहा।

खर्चापानी: एक रामबाण

शिशिर शुक्ला

हास्य व्यंग्य

'खर्चा' और 'पानी' वैसे तो दो अलग–अलग शब्द हैं और अगर उनके अर्थों की बात की जाए, तो वे भी एक दूसरे से ना के बराबर संबंध रखते हैं। किंतु जब इन दोनो शब्दों का संयोग हो जाता है तो मानो एक नया महान सृजन हो जाता है। दोनों के संयोग से उत्पन्न 'खर्चापानी' गजब की क्षमता रखता है।

हमारे देश की एक विशेषता है कि यहाँ बड़ी से बड़ी समस्या के समाधान लिए एक अमोघ अस्त्र मौजूद है जिसका नाम है 'जुगाड़'। जो समस्या बड़े–बड़े नियम कानूनों से पूरे संसार में कहीं ना हल हो पा रही हो वह भारत में चुटकियों में हल हो जाती है, वो भी जुगाड़ से। साला यह जुगाड़ भी कोई सीधा साधा नहीं है। यह एक बहुरूपिया है जिसने अपने अनेक रूप बना रखे हैंए जो परिस्थितियों के अनुसार अपना–अपना ग्राहक ढूंढा करते हैं। लेकिन इतना सौ फ़ीसदी सच है कि जुगाड़ जब पूरे मन से काम करने पर उतर आए तो इसके फेल होने का प्रश्न ही नहीं उठता। इस जुगाड़ का सबसे प्रसिद्ध और लोकप्रिय रूप है 'खार्चापानी'। 'खर्चापानी' नाम देकर केवल इसे सफेद पोशाक पहनाने का प्रयास किया गया है। सच तो यह है कि जो कोई एक बार इसे भुगत चुका है, वह इसकी असलियत भली–भांति जानता है। किसी व्यक्ति का किसी भी तरह का काम अटका हो या सीधे तरीके से ना हो पा रहा हो, वह ज़रा एक बार 'खर्चापानी' का सहारा लेकर तो देखे। उसे आर्थिक रूप से थोड़ी चोट तो अवश्य लगेगी, लेकिन काम की टेंशन एकदम गायब हो जाएगी। यहां पर एक बात बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है कि 'खर्चापानी' का रूप भी सदा एक सा नहीं रहता। एक कहावत है। 'जैसा देश वैसा भेष', 'खर्चापानी' भी काम के स्वरूप, उसकी जटिलता, व्यक्ति के स्वभाव एवं परिस्थितियों के आधार पर अपना रूप रंग बदलता रहता है। मुख्य रूप से 'खर्चापानी' सरकारी कार्यालयों में मौजूद रहता है क्योंकि इसे खूब अच्छी तरह से पता है कि वहां पर इसकी जरूरत सबसे ज्यादा पड़ती है। हमारे देश के युवा से लेकर वृद्ध तक जुगाड़ के इस जानेमाने रूप का प्रयोग विभिन्न स्थानों पर करते हैं।

आलम यह हो गया है कि हमारे यहां के लोग भली–भांति अभ्यस्त हो चुके हैं कि कौन से काम के लिए कितना व किस तरह का 'खर्चापानी' करना है। यही वजह है कि भारत में बड़े से बड़े काम का मजाक उड़ाते हुए कहा जाता है कि 'खर्चापानी' होगा तो साला यह काम चुटकियों में हो जाएगा। अब समझ में नहीं आता कि इसे एक अभिशाप कहा जाए कि सही काम गलत तरह से हो जाता है और गलत से गलत काम को भी 'खर्चापानी' की कृपा से सही बना दिया जाता है, अथवा वरदानस्वरूप समझा जाए कि बड़े से बड़ा काम भी 'खर्चापानी' की कृपा से पलक झपकते ही हो जाता है। ख़ैर जो भी हो, इतना तो निश्चित है कि भारत में 'खर्चापानी' की महिमा कभी भी कम नहीं होगी।

युद्ध के नगाड़े बजाओ

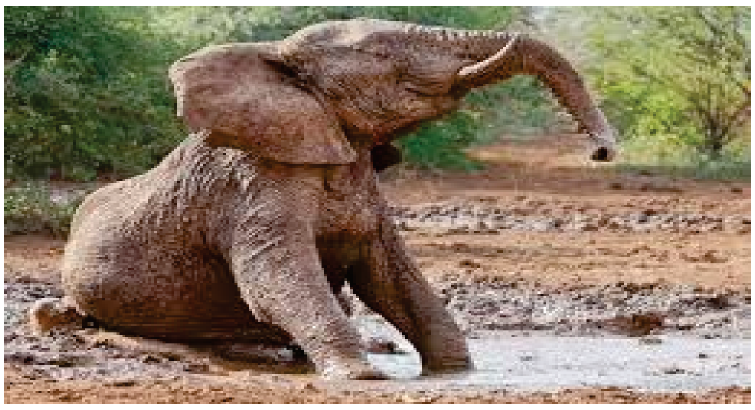

अलख कांत श्रीवास्तव

बोध कथा

एक राजा के पास कई हाथी थे, लेकिन एक हाथी बहुत शक्तिशाली था, बहुत आज्ञाकारी, समझदार व युद्ध–कौशल में निपुण था। बहुत से युद्धों में वह भेजा गया था और वह राजा को विजय दिलाकर ही वापस लौटता था। इसलिए वह महाराज का सबसे प्रिय हाथी था। समय गुजरता गया। और एक समय ऐसा भी आया, जब वह वृद्ध दिखने लगा।

अब वह पहले की तरह कार्य नहीं कर पाता था। इसलिए अब राजा उसे युद्ध क्षेत्र में भी नहीं भेजते थे। एक दिन वह सरोवर में जल पीने के लिए गयाए लेकिन वहीं कीचड़ में उसका पैर धँस गया और फिर धँसता ही चला गया।

उस हाथी ने बहुत कोशिश की, लेकिन वह उस कीचड़ से स्वयं को नहीं निकाल पाया। उसकी चिंघाड़ने की आवाज से लोगों को यह पता चल गया कि वह हाथी संकट में है। हाथी के फँसने का समाचार राजा तक भी पहुँचा। राजा समेत सभी लोग हाथी के आसपास ईकट्ठे हो गए और विभिन्न प्रकार के प्रयत्न उसे निकालने के लिए करने लगे लेकिन बहुत देर तक प्रयास करने के उपरांत कोई मार्ग नहीं निकला।

उस समय गौतम बुद्ध वहाँ से गुजर रहे थे। गौतम बुद्ध ने रुककर घटना स्थल का निरीक्षण किया और फिर राजा को सुझाव दिया कि झील के चारों ओर युद्ध के नगाड़े बजाए जाने चाहिए। श्रोताओं को इस विचित्र सुझाव पर आश्चर्य हुआ कि युद्ध में नगाड़े बजाकर फंसा हुआ हाथी कैसे बाहर निकलेगा? लेकिन वे गौतम बुद्ध से कुछ नहीं कह सके और नगाड़े बजाने लगे। जैसे ही युद्ध के नगाड़े बजने प्रारंभ हुए, वैसे ही उस मृतप्राय हाथी के हाव–भाव में परिवर्तन आने लगा।

पहले तो वह धीरे–धीरे करके खड़ा हुआ और फिर सबको हतप्रभ करते हुए स्वयं ही कीचड़ से बाहर निकल आया। गौतम बुद्ध मुस्कुराए और सबको स्पष्ट किया कि हाथी की शारीरिक क्षमता में कमी नहीं थी, आवश्यकता मात्र उसके अंदर उत्साह के संचार करने की थी। जीवन में उत्साह बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य सकारात्मक चिंतन बनाए रखें और निराशा को हावी न होने दें। कभी–कभी निरंतर मिलने वाली असफलताओं से व्यक्ति यह मान लेता है कि अब वह पहले की तरह कार्य नहीं कर सकता, लेकिन यह पूर्ण सच नहीं है। सकारात्मक सोच ही आदमी को 'आदमी' बनाती है। उसे अपनी मंजिल तक ले जाती है।

'ऋतुराज' की पाँच रुबाइयाँ

जो बात बतानी है बताओ न अभी।
आँखों से मेरी पर्दा हटाओ न अभी।
कुछ दिन तो मुझे और रखो वहम में तुम,
कश्ती को किनारे से लगाओ न अभी।?

हर बोझ खुशी से वो उठाने वाले।
घर छोड़ के आते हैं कमाने वाले।
हर एक को मत शक़ की नज़र से देखो,
मुश्किल से ही मिलते हैं निभाने वाले।

बे–वक्त व बे–बात सुना देते हो।
ऋतुराज तुम्हीं दिल को दुखा देते हो।
माँ–बाप तो नेमत हैं ख़ुदा की प्यारे,
इक तुम हो कि उनको भी रुला देते हो।

नफ़रत से तो परहेज़ किया जाता है।
फिर बज्मे मुहब्बत को जिया जाता है।
उस रब के सभी बंदे नज़र आते हैं,
पैग़ाम–ए–मुहम्मद जो दिया जाता है।

आवाज़ लगाने का बहाना तो मिले।
कश्ती को कोई ठौर ठिकाना तो मिले।
हम कह भी सकें अपना जहाँ भर में जिसे,
दुनिया में कोई शख्स दिवाना तो मिले।

विकास सोनी

तीन ग़ज़लें

(1)

बच्चों ने आज फिर से पशेमान कर दिया।
माँ–बाप घर जो आए तो मेहमान कर दिया।
फुरसत किसे है घर में जो दे संस्कार भी,
देकर के जेब खर्च है भुगतान कर दिया।

जिनको बड़ा किया है बड़े लाड़.प्यार से,
वे कह रहे हैं कौन सा अहसान कर दिया।
इस दौर में तो चाहिए कमरे अलग–अलग,
फूलों भरे चमन को बियाबान कर दिया।
बेटे–बहू हैं 'ज्ञान' कमाने की होड़ में,
क्या हो गया जो आपका अपमान कर दिया।

(2)

जुल्म होते देख कैसे गुमशुदा हो जाऊँगा,
एक शाइर हूं तो क्या ख़ामोश सा हो जाऊंगा।
कर दिए पैंतीस टुकड़े प्यार के जिस शख्स ने,
आज उसके साथ मैं कैसे खड़ा हो जाऊँगा।
मर गई श्रद्धा सियासत और मज़हब मौन हैं,
लग रहा मैं भी यहाँ पर अनसुना हो जाऊँगा।

मान लो ये दो जनों का मसअला है आपसी,
एक दिन मैं भी यहाँ पर मसअला हो जाऊँगा।
काँप जाती रूह है हैवानियत को देखकर,
'ज्ञान' क्या इंसानियत से ही जुदा हो जाऊँगा।

(3)

बोझ बनकर न जियूँ कुछ तो सनक पैदा हो।
दिल में इक बार तो जीने की ललक पैदा हो।
दिन गुज़रता है यक़ीनन ही ख़यालातों में,
वो मुक़म्मल हों कोई ऐसी झलक पैदा हो।
आके महफ़िल में वो गुमसुम सा छिपा बैठा है,
साकिया ज़ाम उठा कुछ तो झनक पैदा हो।
रोज मिलता है मगर खुलके नहीं मिलता है,
उसकी फ़ितरत पे भला क्यों नहीं शक़ पैदा हो।
आदमी है वो बड़ा 'ज्ञान' है रुतवा उसका,
हाथ कैसे लें मिला क्यों न झिझक पैदा हो।

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान' कवि

कभी उसकी भी कहानी लिख...

चल बबुआ अपनी पार्टी बदल, जहां
लाल बत्ती का जुगाड हो वहां को चल।
गांव से उठ तू कहानी लिख बीवी के
हिस्से में परधानी लिख।।
साइकिल के पैडल से लेकर स्कार्पियो
तक की कहानी लिख।।
सच की नाफरमानी झूठ की कहानी लिख।
वही माइक वही मैदान वही मुद्दे कभी
जनता की भी कहानी लिख।।
एक रुपया बढ़ा दिया मिड डे मील का
बजट।
तेरा बेटा जिसे स्कूल में पढ़ता है
कभी उसकी भी कहानी लेख।।
अस्पताल के फर्श पर तड़पती
प्रसूताए बिना डाक्टर के प्रसव कराती
नर्स।
तुझे अटैक जब पड़ा था तू भर्ती था
जिस बीआईपी अस्पताल में कभी
उसकी भी कहानी लिख।।
गरीब किसान का बेटा पढ़ता है
ढिबरी की रोशनी में
तेरे घर की दीवार पर लगी उन
बेशुमार लाइटों की कहानी लिख।।

हजारों में होती है तेरे कुर्ते की कलफ
और धुलाई।
कफन को तरसती ठेले पर लदी उस
लाश की कहानी लिख।।

सुदीप शुक्ला, कवि
शाहजहांपुर

गुलाब का नजरिया...

लघुकथा

मीरा जैन, उज्जैन

जैसे ही झंडा वंदन हुआ तिरंगे ध्वज की गोद में सिमटे सारे फूल लहराते हुए खुशी–खुशी नीचे आ गए किंतु एक गुलाब अपने कांटों के सहारे झंडे से ही चिपक गर्व से फूला नहीं समा रहा था किंतु कुछ ही देर पश्चात गुलाब भी तिरंगे का दामन छोड़ नीचे अपने साथियों के झुंड में आ मिला इस पर एक अन्य पुष्प ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए पूछा–'गुलाब ! तुम अच्छे भले शान से तिरंगे के साथ लहरा रहे थे अचानक नीचे क्यों आ गए', गुलाब ने पूर्ण उत्साह के साथ जवाब दिया–'मित्र ! मैं भी स्वयं को तिरंगे के समकक्ष पा बेहद खुश था किंतु जब मेरी नजर तिरंगे झंडे की आन, बान, शान, स्वाभिमान और उसमें समाया खूबसूरत, धर्मनिरपेक्ष, शक्तिशाली हिंदुस्तान पर गई तो मुझे महसूस हुआ कि मेरा स्थान वास्तव में तिरंगे के चरणों में ही है इस तिरंगे पर हम जैसे करोड़ों कुर्बान हो जाए तब भी कम है' गुलाब का स्पष्टीकरण सुन अन्य सभी फूलों ने खूब ताली बजाई और उसके सम्मान में कहा–'भाई ! तुम जैसी सोच उन मुट्ठी भर लोगों की भी हो जाए जो बेवजह इस प्यारे से देश मे अराजकता फैलाने का काम करते हैं तो यह देश किसी स्वर्ग से कम नहीं है।'

लोक पहल
साप्ताहिक समाचार पत्र
बन रहा है पाठकों की
पहली पसंद
सम्पर्क करें : 9935740205, 9455152599
Write to us : lokpahalspn@gmail.com

सम्पादकीय

बढ़ते विद्यार्थी घटते स्कूल

देश और प्रदेश की सरकारों की यह जिम्मेदारी बनती है कि देश की समूची आबादी की पहुंच अच्छी शिक्षा तक हो और वह देश के विकास में अपनी भूमिका का निर्वहन कर सके। मगर सरकारों द्वारा अन्य मोर्चों पर काम करते हुए शिक्षा को शायद प्राथमिकता सूची में अहमियत नहीं मिल पाती। स्वाभाविक ही इसका असर सभी पक्षों पर पड़ता है और उसकी गुणवत्ता प्रभावित होती है।

कायदे से होना यह चाहिए कि जरूरतमंद आबादी के लिए स्कूल और अच्छी शिक्षा.दीक्षा सुनिश्चित करे। मगर संसाधनों की कसौटी पर प्राथमिकता सूची में वाजिब जगह न मिल पाने की वजह से इस दिशा में वक्त पर पहल नहीं की जाती। नतीजतन, बाद में तस्वीर और बिगड़ती जाती है और कई बार चालू स्कूलों को भी बंद करने की नौबत आती है।

राज्यसभा में केंद्र सरकार ने एक सवाल के जवाब में बताया कि पिछले चार साल के दौरान देश भर में इकसठ हजार से ज्यादा सरकारी स्कूल बंद हो गए। हालांकि इसके साथ ही सरकार ने यह भी बताया कि पिछले तीन सालों में सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की तादाद में एक करोड़ तेईस लाख की बढ़ोतरी हुई।

यह अपने आप में एक विचित्र बात है कि जिस अवधि में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ी, उसी बीच भारी संख्या में स्कूल बंद हुए। सवाल है कि आखिर वे कौन–सी स्थितियां थीं कि विद्यार्थियों की बढ़ती तादाद की जरूरतों के मद्देनजर जहां स्कूल बढ़ने चाहिए थे, वहां उनकी संख्या कम हुई? क्या यह मान लिया गया कि जितने विद्यार्थी सरकारी स्कूलों में नामांकित हैं, उनकी जरूरतों के मद्देनजर पर्याप्त स्कूल हैं। अनेक मौकों पर ऐसी खबरें आती रही हैं कि ज्यादातर स्कूलों में क्षमता से अधिक विद्यार्थी हैं और कक्षाओं में शिक्षक–विद्यार्थी अनुपात में भारी असंतुलन है। इन वजहों से स्कूलों में पढ़ाई–लिखाई की गुणवत्ता गंभीर रूप से प्रभावित होती है। स्कूलों को बंद करने के पीछे आमतौर पर वजह यह बताई जाती है कि उस जगह पर उसकी जरूरत नहीं थी। मगर एक ही समय में विद्यार्थियों की संख्या में इजाफा हो रहा है और दूसरी ओर स्कूल बंद किए जा रहे हों, तो उसे कैसे देखा जाएगा!

देश भर के सरकारी स्कूलों में शिक्षकों के लाखों पद खाली पड़े हैं। ऐसे में यह एक जटिल स्थिति है कि विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या, घटते स्कूल और शिक्षकों की कमी के बीच गुणवत्ता आधारित या अच्छी शिक्षा कैसे मुहैया कराई जाएगी। यह ध्यान रखने की जरूरत है कि किसी भी देश के विकास की बुनियाद इस बात पर टिकी होती है कि वहां शिक्षा की सूरत कैसी है और इसे लगातार बेहतर करने की दिशा में सरकारें क्या कदम उठा रही हैं।

बहुत प्रासांगिक है स्वामी विवेकानंद जी की मानव धर्म

कुलदीप दीपक

संसार अनेक तरह के द्वंद्वों के बीच से गुजर रहा है। कहीं द्वेष कहीं जाति, कहीं धर्म तो कहीं संप्रदायवाद को लेकर विवाद खड़े हो रहें हैं। हर तरफ कोलाहल और हाहाकार मचा है। हर कोई दूसरे को अनदेखा कर अपना हित तलाशने में जुटा है। सारे संबंध हाशिए पर आ गए हैं। ऐसे में अगर द्वंदों से मुक्ति का रास्ता कहीं नजर आता है तो उस मानव धर्म में जिसका सपना देश के युवा संन्यासी स्वामी विवेकानंद ने कई दशक पहले संजोया था। जब भारत की पहचान विश्व पटल पर रूढ़िवाद जैसी तमाम कुप्रथाओं को लेकर होती थी तब उन्होंने ही देशवासियों को जागरूक कर भारत को फिर से जाग्रत करने की आधार शिला रखी। साथ ही आध्यात्मिक भारत की प्रगति का मार्ग मजबूत किया। उन्होंने साफ तौर पर कहा था कि भारत की राष्ट्रीय एकता देश की बह रहीं विभिन्न धाराओं के एकाकार से ही संभव है। उन्होने इस बात को दुनिया के सामने 11 सितंबर 1893 को शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में बड़ी बेबाकी के साथ रखा।

उन्होने धर्म को श्रेष्ठता प्रदान करते हुए सम्मेलन में आए धर्म प्रतिनिधियों से कहा था कि मनुष्य–मनुष्य के बीच भेद करना धर्म का काम नहीं है। जो धर्म मनुष्यों में टकराव पैदा करता हैए वह कुछ सिरफिरे लोगों का अपना विचार अथवा मत हो सकता है। उसे धर्म की संज्ञा देना मनुष्य के विवेक का अपमान करना है। उन्होंने धर्म को द्वंद्व से परे बताया। उनका मानना था कि धर्म का आधार दया, ममता, आत्मीयता और सहानुभूति है। मनुष्य धरती पर रचनात्मक काम करने के लिए पैदा हुआ है। किसी धार्मिक विचार धारा विशेष का बल पूर्वक प्रचार और प्रसार करने के लिए नहीं। हमें समाज में समरसता लाने के लिए धर्म को द्वंद्व से अलग करना होगा। यदि ऐसा नहीं हो सका तो मानव सभ्यता अपने विकास के सही पथ से भटक जाएगी। आगे आने वाली पीढ़ियां ज्ञान के प्रकाश की ओर बढ़ने के स्थान पर अज्ञान के घोर अंधकार में जा गिरेंगी। वे मानते थे कि धर्म मनुष्य

जयंती पर विशेष

पर खासतौर पर जोर दिया। वे कहते थे कि पश्चिम देशों की प्रगति और सफलता का रहस्य शिक्षा ही है। भारत और अमेरिका का उच्च वर्ग तो एक ही समान है, लेकिन भारत का पिछड़ा और निज वर्ग अशिक्षित है। हमें इनको शिक्षा के जरिए आगे लाने का प्रयास करना चाहिए। हमें शिक्षा के माध्यम से व्यक्तियों में विकास लाकर उनमें महान आत्माओं को समावेशित करना होगा। अशिक्षा भारत की तरक्की में बाधक है। वह जन साधारण को शिक्षित करके देश की मुख्यधारा से जोड़ने के प्रबल पक्षधर थे। वह मानते थे कि इनके शिक्षित होने से ही देश सच्चे अर्थों में मजबूत राष्ट के रूप में खड़ा हो सकेगा। उन्होने अंग्रेजी शासकों द्वारा दी गई शिक्षा को भी अव्यवहारिक बताया था। उन्होने शिक्षा की उपदेयता सिद्ध कर कहा था कि शिक्षा वो जो श्रद्धा को जन्म दे। ऐसे विचार दिए जिसमें संपूर्ण मानवता का हित हो। व्यक्तित्व निर्माण के लिए श्रद्धापरक शिक्षा पर भी जोर दिया। गेरुआ वस्त्र धारण करने वालों को उसका प्रयोजन भी बताया। वह कहते थे कि मठ आदि निर्माण करके क्या होगा? इसे बेच बाच कर कुल राशि दरिद्र नारायण की सेवा में अर्पित कर दो। भला वृक्ष की छांव में बसेरा करने वालों को घर.द्वार की क्या जरूरत? जब देश के लोग रोटी कपड़े को तरस रहे हों तब हम अपने मुंह में ग्रास देते लज्जा आनी चाहिए। पश्चिम में धर्म प्रचार करने जाने के पीछे इनका मकसद देश के लोगों के लिए भरण पोषण के लिए शिक्षा व्यवस्था नही तो पूजा पाठ करना बेकार है। आडंबर है। शंख फूकना, घंटी बजाना बंद कर देना। दीप लेकर आरती उतारने का क्या प्रयोजन। अपनी मुक्ति की साधना और शास्त्र के ज्ञान का घमंड छोड़ दो। उन्होंने संन्यासियों को संदेश दिया कि गांवो में घुमकर दरिद्र नारायण और दलितों की सेवा में जीवन अर्पित कर दो। ऐसे साधन जुटाओ जिससे दीन हीनों की सेवा हो सके। उन्होंने देश की जनता का आहान किया था कि सभी विवादों और कलह को समाप्त कर स्नेह की भव्य धारा को सर्वत्र प्रवाहित करें। भारत की बिखरी आध्यात्मिक शक्तियों के एकीकरण में ही राष्ट्रीय एकता निहित है। स्वामी जी के ये विचार आज भी उतने ही प्रांसगिक है जितने उनके जीवन काल में रहे। आज जब विश्व पटल पर हर देश जनता के हितों को अनदेखा कर अपनी साख बनाने में जुटा है तब स्वामी जी का दरशन उन्हें साधु संतों की भीड़ में एक अलग ऊंचाई पर खड़ा दिखाई देता है।

तुमको लग जाएंगी सदियाँ हमें भुलाने में...

एक अप्रतिम कवि गोपालदास 'नीरज'

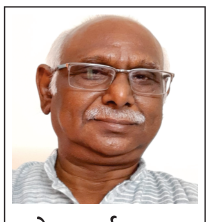
राजेन्द्र वर्मा लखनऊ

हिंदी छंदोबद्ध कविता विशेषतः गीत और ग़ज़ल को लोकप्रिय बनाने में जिन कवियों का योगदान है, उनमें से गोपालदास नीरज का नाम अग्रगण्य है। वे मंच के सफल कवि तो थे हीए साहित्यिक दृष्टि से भी उनका काव्यए उत्तम श्रेणी का है। फिल्मों में भी उन्होंने साहित्यिक गीतों की परम्परा को आगे बढ़ाया। उन्होंने गीत, ग़ज़ल, मुक्तक, दोहे आदि लिखे, लेकिन उनकी पहचान गीतकार के रूप में ही अधिक है। मंचों के तो वे बादशाह रहे ही हैं। 1942 में जब उन्होंने लालक़िला के कवि.सम्मेलन से कविता पढ़ी, तभी से वे लोकप्रिय हो गए। 1944 में गाँधी–जिन्ना सम्मेलन के बाद उन्होंने एक गीत लिखा, 'आज मिला है गंगाजल, जल दमदम का' तो वे राजनीतिक हलक़े के भी प्रिय कवि बन गए। 1955 में रचित उनका गीत, 'कारवाँ गुजर गया' सिग्नेचर गीत बन गया। गीत और ग़ज़ल के उनके अनेक काव्य–संग्रह प्रकाशित हुए। उनका पहला संग्रह 1944 में निकला, नाम थाक़ संघर्ष। तत्पश्चात, उनके क़रीब दो दर्जन से अधिक संग्रह प्रकाशित हुए। इनमें, अंतर्ध्वनि (1946), विभावरी (1948), प्राण–गीत (1951), नीरज की पाती (1958), कारवाँ गुज़र गया (1964) और फिर दीप जलेगा (1970) प्रमुख हैं। 'नीरज की गीतिकाएँ' (1987) उनका ग़ज़ल संग्रह है और 'नीरज दोहावली' (2001) में उनके दोहे संगृहीत हैं। काव्य–मंचों के वे बादशाह रहे। उनकी आवाज़ और प्रस्तुति बहुत दिलकश रहती थी। बच्चन के बाद सबसे लोकप्रिय कवि वे ही हैं। उनकी कविताओं के केंद्र में प्रेम और मानवता है। इनसान को इनसान बनाने की उनकी फ़िक्र उनके काव्य में जगह–जगह दर्ज है। उनके तमाम मुक्तक, शेर और दोहे लोगों की ज़ुबान पर हैं...**अबके सावन में ये शरारत मेरे साथ हुई, मेरा घर छोड़ के कल शहर में बरसात हुई। इतने बदनाम हुए हम तो इस ज़माने में, तुमको लग जाएँगी सदियाँ हमें भुलाने में। अब तो मज़हब कोई ऐसा भी चलाया जाए, जिसमें इनसान को इनसान बनाया जाए। अद्भुत इस गणतंत्र के, अद्भुत हैं षड्यंत्र। संत पड़े हैं जेल में, डाकू फिरे स्वतंत्र।**

फिल्मों में उन्होंने गीत–लेखन भी किया। 1960 से 1972 तक उन्होंने 'नई उमर नई फ़सल, कन्या दान, तेरे मेरे सपने, प्रेम प्रतिज्ञा, प्रेम पुजारी, मेरा नाम जोकर, चंदा और बिजली, छुपा रुस्तम, शर्मीली, पहचान' आदि फिल्मों में गीत लिखे और उन्हें साहित्यिक ऊँचाई प्रदान की। उनकी काव्य–प्रतिभा के लिए भारत सरकार ने उन्हें 1991 में पद्मश्री तथा 2007 में पद्मविभूषण से भी सम्मानित किया गया। उत्तर प्रदेश सरकार ने 1994 में उन्हें 'यशभारती' से सम्मानित किया और बाद में भाषा संस्थान का अध्यक्ष नियुक्त कर उन्हें कैबिनेट मंत्री का दर्ज़ा प्रदान किया। नीरज जी की कविता से मेरा परिचय कक्षा छह के कोर्स में लग, एक गीत से हुआ। दीपावली को लेकर रचे गए गीत में हालांकि कुछ कठिन शब्द भी थे, फिर भी गुनगुनाने में गीत में को बहुत भाता था। मुखड़े की ये पंक्तियाँ पढ़ते ही याद हो गई थीं... **जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना, अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए। बाद में 1975 में जब लखनऊ आया, तब कुछ समय बाद एक फ़िल्म देखी 'पहचान', जिसमें एक गीत था...बस यही अपराध मैं हर बार करता हूँ, आदमी हूँ, आदमी से प्यार करता हूँ।**

मुकेश का गाया यह गीत रेडियो में भी खूब बजा करता था। उनका एक और गीत,

जयंती पर विशेष

'कारवाँ गुज़र गया' भी बहुत मशहूर हुआ था, 'चामर' छंद पर आधारित इस गीत की भाषा और उसमें पिरोया दर्शन हम युवाओं के लिए अद्भुत आकर्षण की वस्तुएँ थीं। उनके और भी कई गीत बहुत भाते थे। 'चंदा और बिजली' फ़िल्म का उनका यह आध्यात्मिक गीत कितना मार्मिक और प्रेरक है...काल का पहिया घूमे भैया! लाख तरह इनसान चले, ले के चले बारात कभी तो, कभी बिना सामान चले। 'लखनऊ महोत्सव' में लगभग हर साल नीरज जी की अध्यक्षता में कवि–सम्मेलन में उन्हें सुनता रहता था, लेकिन उनसे मुलाक़ात का भी मौक़ा मिलेगा, इस पर कभी सोचा न था।

2001 की गर्मियों की बात होगी। किसी कार्यक्रम के सिलसिले में नीरज जी लखनऊ आए थे और मीराबाई मार्ग पर स्थित स्टेट गेस्ट हाउस में ठहरे हुए थे। मेरे अभिन्न मित्र सिंदूर जी के साथ जब मैं नीरज जी के कमरे में पहुँचा, तो देखा कि डॉ सुरेश, सर्वेश अस्थाना और नीलम श्रीवास्तव पहले ही वहाँ बैठे हुए थे। मुझे और सिन्दूर जी को देखकर, पता नहीं किस कारण से, डॉ सुरेश और सर्वेश ज़रूरी काम बताकर वहाँ से निकल लिए। नीलम जी बैठे रहे। सिन्दूर जी नीरज से मेरा परिचय कराते हुए कहा, 'ये हैं राजेन्द्र, बढ़िया गीत लिखते हैं। इनकी एक गीत की पुस्तक जल्द ही आने वाली है।' उस समय 'अन्तर सन्धि' प्रकाशनाधीन थी। नीलम जी ने जोड़ा, और उसकी भूमिका मैंने लिखी है। 'अरे वाह!' नीरज जी मुस्कुराते हुए बोले, 'जब आप लोग कह रहे हैं, तो अच्छे कवि होंगे ही।' फिर मेरी तरफ़ मुख़ातिब होते हुए कहा, 'हाँ, तुम्हारे गीत कहीं पढ़े हैं। किसी पत्रिका में...

मैंने उनके प्रति आभार जताते हुए कहा, 'सर! जैसे ही किताब आती है, एक प्रति आपको भेजूँगा और उस पर आपका आशीष पाना चाहूँगा।'

'अरे वाह!' फिर कुछ ठहरकर बोले, 'तुम अपनी किताब भिजवाना, मैं उसे ज़रूर पढ़ूँगा!' जब 'अन्तर–सन्धि' छपी, तो मैंने उसकी एक प्रति नीरज जी को भेजी और उस पर उन्होंने एक पत्र के द्वारा प्राप्ति सूचना के साथ अपनी टिप्पणी भी दी। यह पत्र मेरी धरोहर में शामिल है। एक और घटना की याद है जिसके कारण नीरज जी मुझसे थोड़ा नाराज़ भी हुए। बात 1999 में मेरे संपादन में प्रकाशित 'अविरल मंथन' के ग़ज़ल विशेषांक से जुड़ी है। लेकिन आमने–सामने बातचीत हुई 2003 में जब हिंदी ग़ज़ल के बदले, 'गीतिका' की बात चल पड़ी। मैं इस नामकरण के पक्ष में न तब था और न अब हूँ। वास्तव में, ग़ज़ल विशेषांक में उनका एक लेख था जिसमें उन्होंने 'गीतिका' के नामकरण के पक्ष में लिखा था, इस पर मेरा कहना था कि गीतिका तो एक हिंदी का मात्रिक छंद है जो वर्णिक छंद की भाँति है, अंतर बस इतना है कि एक गुरु के स्थान पर दो लघु वर्णों का प्रयोग हो सकता है। उर्दू में यह 'बहरे–रमल' है। इसे ग़ज़ल कहने वाला हर शायर जानता है। हाँ, अगर 'गीतिका' छंद में ही गज़लें कहीं जाएँ तो इसका 'गीतिका' नामकरण ठीक है, जैसे दोहा... जो एक छंद विशेष भी है और विधा भीय अन्यथा यह तो अपने दोष छिपाने वाली बात हुई कि जब उर्दू की बहर में ग़ज़ल नहीं कह पाए, या कोई ग़ज़ल बेबहर हो जाए, तो उसे 'गीतिका' नाम दे दिया जाए। मेरी बात उन्हें अच्छी नहीं लगी। कुछ नाराज़–से दिखे, और कहा, 'ठीक है, आप हिंदी ग़ज़ल के पक्ष में हैं, तो आप उसे हिंदी ग़ज़ल कहिए, लेकिन मैं तो 'गीतिका' ही कहूँगा।'

अपने ज़िद्दी स्वभाव के कारण मैं अभी भी प्रतिवाद करना चाहता था, लेकिन मौक़े की नज़ाकत और उनके प्रति सम्मान का विचार कर मैंने चुप्पी साध ली। असहमति के बावजूद स्मृतिशेष नीरज जी मेरे और मेरे प्रेरणा–स्रोत बने रहे। आज वे सशरीर नहीं हैं, लेकिन 'नीरज' जी जैसे कवि मरते नहीं बस, महफ़िल बदल लेते हैं...उनकी स्मृति को प्रणाम!

बढ़ती उम्र में इस तरह करें मेकअप

जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, त्वचा के कसाव में कमी आना, झुर्रियां, आंखों का ड्राई होना और न जाने कितनी ही समस्याओं से महिलाओं को दो चार होना पड़ता है। ऐसे में अपने चेहरे की कमियों को छिपाने और खुद को आकर्षक दिखाने के लिए वह मेकअप का सहारा लेती हैं। लेकिन बढ़ती उम्र में आपके मेकअप के तरीके में बदलाव करना भी बेहद आवश्यक हो जाता है। अगर आपका मेकअप व उसे लगाने का तरीका सही नहीं होगा तो आपको बूढ़ी घोड़ी लाल लगाम जैसे जुमले भी सुनने को मिल जाएंगे। तो आईए जानते हैं मेकअप करने के सही तरीकों के बारे में-

सीटीएमपी है सही

चालीस साल के बाद त्वचा ड्राई हो जाती है। ऐसे में स्किन को नरिश करने के लिए सीटीएमपी अर्थात क्लींजिंग, टोनिंग, मॉयश्चर इजिंग एंड प्रोटेक्शन आवश्यक है। क्लीजिंग के लिए आपको नरिशिंग क्लीजिंग मिल्क का इस्तेमाल करना चाहिए। यह त्वचा को डीप क्लीन करने के साथ-साथ रूखेपन से भी दूर करता है। स्किन पर एजिंग दिखने का एक मुख्य कारण ओपन पोर्स होते हैं। इन पोर्स को कम करने के लिए क्लीजिंग के बाद टोनिंग करना बेहद आवश्यक है। ध्यान रहे कि आपका टोनर एल्कोहल युक्त न हो बल्कि उसमें लाइकोपीन हो। साथ ही चेहरे की नमी को बनाए रखने के लिए मॉयश्चराइजर जरूर लगाएं। चेहरे की केयर करना जितना आवश्यक है, उतना ही जरूरी है उसकी प्रोटेक्शन। सूर्य की हानिकारक किरणें न केवल त्वचा को झुलसा देती हैं, बल्कि इनके कारण झुर्रियां, ब्राउन स्पॉट्स आदि एजिंग की निशानियां दिखाई देने लगती हैं। इसलिए इनसे बचने के लिए धूप में निकलने से पहले सनस्क्रीन अवश्य लगाएं।

न हो अधिक

अक्सर महिलाएं सोचती हैं कि यदि उन्हें अपने चेहरे की कमियों को छिपाना है तो इसके लिए बहुत अधिक मेकअप करना पड़ेगा। लेकिन वास्तव में उनकी यह सोच एकदम गलत है। बढ़ती उम्र में महिलाओं को हमेशा ही लेस इज मोर का फंडा अपनाना चाहिए। साथ ही मेकअप को थोपने की बजाय उसे चेहरे पर मिक्स करें ताकि वह आपकी स्किन का ही एक पार्ट लगे और आपका चेहरा बेढंगा न दिखाई दे।

लाइट है बेस्ट

आपका मेकअप सिर्फ लेस ही होना आवश्यक नहीं है, बल्कि आपकी मेकअप किट में आपको लाइट कलर को एड कर देना शुरू कर देना चाहिए। अमूमन बढ़ती उम्र में बहुत अधिक ब्राइट कलर्स अच्छे नहीं लगते। वहीं लाइट कलर आपकी पर्सनैलिटी को एक एलीगेंट लुक देते हैं। ब्लशर से लेकर लिपस्टिक तक आप पीच, लाइट ब्राउन, पिंक, मॉव कलर आदि का चयन करें। अगर आपको रेड कलर पसंद है तो आप लिपस्टिक में ब्राइट रेड की जगह डीप रेड ही लगाएं। इसके अतिरिक्त उम्र के इस पड़ाव में होंठ थोड़े पतले लगने लगते हैं, इसलिए उनका उभार बनाए रखने के लिए व उन्हें थोड़ा मोटा दिखाने के लिए लिपग्लॉस लगाना बेहतर रहता है। इससे होंठों में भी एक चमक आ जाती है।

ब्लश करेंगे चिक्स

जैसे आपका मेकअप आईस और लिप्स के मेकअप के बिना अधूरा ही रह जाता है, ठीक उसी प्रकार ब्लश के बिना भी आपका मेकअप पूरा नहीं होता। अक्सर हम मेकअप के दौरान ब्लश को नजरअंदाज ही कर देते हैं, लेकिन यदि आपके चेहरे पर बढ़ती उम्र के साइन नजर आते हैं तो ब्लश को नजरअंदाज करना आपकी बहुत बड़ी भूल साबित होगी। ब्राउन ब्लश आपके चेहरे को एक नई परिभाषा व आकार देने के लिए पर्याप्त है।

नकली लैशेज का कमाल

समय के साथ हार्मोंस में बदलाव के कारण महिलाओं के लैशेज टूटने लगते हैं। आजकल मार्केट में नकली लैशेज आसानी से अवेलेबल हैं। इन्हें लगाने से आंखों को एक नया रूप मिलता हैं। इसलिए यदि आप किसी पार्टी के तैयार हो रही हैं तो नकली लैशेज का प्रयोग करना अच्छा रहता है।

इन बातों का रखें ख्याल

खाना सिर्फ आपका पेट ही नहीं भरता बल्कि इसमें वह सभी पोषक तत्व होते हैं जो आपके शरीर के विकास में कहीं न कहीं सहायक होते हैं। अगर आप चाहती हैं कि बढ़ती उम्र में भी आपके चेहरे की रौनक बनी रहे तो आप अपने खाने का भी खास ख्याल रखें। जहां तक बात एंटी-एजिंग फूड की है तो यह उम्र के बढ़ते असर को तो कम करते हैं ही, साथ ही शरीर की क्षतिग्रस्त कोशिकाओं को ठीक कर शरीर के सभी क्रियाकलापों में सहायता करते हैं।

पानी शरीर के लिए किसी अमृत से कम नहीं है। इसलिए दिन में कम से कम आठ से दस गिलास पानी अवश्य पीएं। इससे शरीर डिटॉक्सीफाई होने के साथ त्वचा भी नर्म बनी रहती है। साथ ही साथ ज्यादा मीठी चीजों का सेवन न करें।

एजिंग की समस्याओं से बचने के लिए जरूरी है कि आप अपनी फिटनेस के प्रति भी जागरूक रहें। स्वस्थ बने रहने के लिए आप साइकिलिंग, जॉगिंग, जिमिंग, स्विमिंग आदि का सहारा ले सकती हैं। इसके अतिरिक्त अपने चेहरे के प्राकृतिक सौंदर्य और तंदुरूस्ती को बरकरार रखने के लिए योग भी एक अच्छा ऑप्शन साबित हो सकता है। विशेषकर चेहरे के लिए किए गए फेस योग से उम्र का असर धीमा हो जाता है।

बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास

बच्चों में नैतिक मूल्यों के विकास से मतलब है उन्हे अच्छे संस्कार देना और अपनी संस्कृति से रूबरू करवाना जिससे वे अपने साथ-साथ पूरे समाज को सही रास्ते पर ले जा सके। बच्चे हमारी परंपराओं के खेवनहार और देश का भविष्य होते हैं पर बच्चे में नैतिक मूल्यों की कमी उनके चरित्र को तबाह कर देती है और वे छोटी उम्र में ही चोरी, बेइमानी और झूठ-धोखा करने लगते हैं। आप अंदाजा लगा सकते हैं कि ऐसे बच्चे बड़े होने पर देश और समाज का क्या भला करेंगे?

नैतिक मूल्यों की जरूरत

कोई बच्चा पढ़ाई-लिखाई में कितना भी होशियार हो पर यदि उसमें नैतिक शिक्षा का अभाव है तो सब बेकार है। नैतिकता हमारी शख्सियत को निखारने की पहली सीढ़ी है। नैतिकता ही वह खूबी है जो हमारे सामाजिक होने की पहचान कराती है और जीवन को बेहतर ढंग से जीना सिखाती है।बच्चों को नैतिक मूल्यों की जानकारी देना इसलिए जरूरी है ताकि वे अच्छे-बुरे, सही-गलत का फर्क समझ सकें और जान सकें कि क्या करने से समाज में आदर, सराहना और प्यार मिलता है और क्या करने से नहीं।

नैतिक मूल्यों की जानकारी देने के लिए क्या करें

बच्चे को नैतिक मूल्यों की जानकारी सबसे पहले परिवार में मिलती है। सबसे पहले मां-बाप ही बच्चों में नैतिक मूल्यों के बीज रोपते हैं। परिवार में ही बच्चा संस्कार, नैतिकता और शिष्टाचार की जानकारी पाता है जिससे वह जान सके कि समाज में बड़ों के साथ, अपने मित्रों के साथ और अन्य लोगों के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए।

घर का माहौल

जैसा ऊपर बताया गया है कि बच्चे का पहला स्कूल उसका घर होता है, तो सबसे पहले घर का माहौल स्नेहशील होना चाहिए। घर का माहौल खुशनुमा होना, घर में बड़ों को आदर होना, बोल-चाल में सभ्यता और सौम्यता, एक-दूसरे के प्रति लगाव जैसी बातों से बच्चे प्रेरित होते हैं और इन बातों को बड़ी जल्दी सीखते हैं।

दोस्ती-यारी का असर

जब बच्चे एक-दूसरे के साथ खेलते हैं तो यह उनमें समाजीकरण की अहसास पैदा करता है। उसके समूह में बच्चे के कुछ गलत किए जाने पर उसे एसा न करने के लिए समझाना या कुछ अच्छा करने पर उसकी प्रसंसा करना उसके आचरण और बर्ताव पर असर करता है पर बच्चों की संगत पर ध्यान देना बहुत जरूरी है। बच्चा जिसके सम्पर्क में आता है, उसी का अनुसरण करता हैं। यह बात घर के बाहर भी लागू होती है। बच्चे घर से ज्यादा अपने यार-दोस्तों की संगत में सीखते हैं। अगर उसके साथियों में झूठ बोलना, चोरी करना जैसी आदतें है तो बच्चा बड़ी जल्दी उसका शिकार बनेगा।

मनोरंजन गतिविधि

बच्चों को नैतिक मूल्यों की जानकारी के लिए मौज-मस्ती और मनोरंजन का किरदार भी अहम् है। अच्छी फिल्में, टीवी प्रोग्राम, कॉमिक्स, कहानियां बच्चों के लिए स्वस्थ्य मनोरंजन का साधन होने के साथ-साथ उनके कोमल मतिष्क पर बड़ी जल्दी असर करती हैं।

माता-पिता को कोशिश करनी चाहिए कि वह बच्चों को बचपन से ही नैतिक मूल्यों की शिक्षा देना शुरू करें। नैतिक मूल्यों की जानकारी बच्चों को सभ्य, चरित्रवान, कर्तव्यनिष्ठ एवं ईमानदार बनाती है।

अगर बाथरूम में रख रहे हैं टूथब्रश तो हो जाएं सावधान

आपने बचपन से सुना होगा कि दांतों की बेहतर सफाई के लिए दिन में दो बार ब्रश करना चाहिए। जब आप आराम से दिन में दो बार ब्रश करते हैं तो इससे आपको कैविटी आदि होने की संभावना काफी हद तक कम हो जाती है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि स्वस्थ और मजबूत दांतों के लिए सिर्फ सही तरह से ब्रश करना ही काफी नहीं होता, बल्कि दांतों में इस्तेमाल किए जाने वाले टूथब्रश की यदि सही तरह से देख-रेख न की जाए तो आपके मुंह में बैक्टीरिया पनपने लगते हैं। तो चलिए जानते हैं कि टूथब्रश रखने का सही तरीका क्या हो-

बदलते रहें समय-समय पर

अमूमन लोग अपने ब्रश को तब तक इस्तेमाल करते हैं, जब तक उसके ब्रिसल खराब नहीं हो जाते लेकिन वास्तव में आपको हर तीन माह में अपने ब्रश को बदल लेना चाहिए। साथ ही अगर आप किसी बीमारी को हराकर उठे हैं तो भी आपको अपना ब्रश बदल लेना चाहिए ताकि वह बीमारी दोबारा आपको प्रभावित न कर सके।

न रखें बाथरूम में

वैसे तो लोग बाथरूम में ही टूथब्रश को रखते हैं लेकिन वास्तव में इन्हें बाथरूम में रखना उचित नहीं माना जाता। दरअसल, आजकल टायलेट अटैच बाथरूम का चलन है। ऐसे में अगर आपका टूथब्रश कमोड के पास होता है तो बहुत से सूक्ष्म जीवाणु आपके ब्रश पर आ जाते हैं और फिर यह आपके मुंह से शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। इसलिए जहां तक हो, इसे बाथरूम में रखने से बचें। अगर आप इसे बाथरूम में रख रहे हैं तो कमोड से इसकी दूरी कम से कम दो फीट तो होनी ही चाहिए।

ऐसे रखें टूथब्रश

टूथब्रश को टूथब्रश स्टैंड में रखने का भी एक तरीका होता है। सबसे पहले तो आप हमेशा ही टूथब्रश को खड़ा करके रखें, ताकि इसमें मौजूद पानी निकल जाए और नमी के कारण आपके ब्रश में बैक्टीरिया न पनपें। इसके अतिरिक्त आप इस बात भी ध्यान रखें कि आपका टूथब्रश घर के अन्य सदस्यों के ब्रश से न टकराए। इससे एक टूथब्रश के बैक्टीरिया आसानी से दूसरे टूथब्रश में चले जाते हैं। वहीं आप कभी भी ब्रिसल को ढक कर रखने के लिए मिलने वाले बॉक्स में रखें। इससे आपके ब्रश में नमी रह जाती है और बैक्टीरिया पनपने लग जाते हैं।

जरूर करें सफाई

जिस तरह आप अपने दांतों की सफाई के लिए ब्रश का इस्तेमाल करते हैं। ठीक उसी तरह इस्तेमाल के बाद ब्रश की सफाई करना न भूलें। इसके लिए आप पानी को उबाल कर उसमें तीन-चार मिनट के लिए ब्रश को डालें। इससे ब्रश में मौजूद सभी बैक्टीरिया खत्म हो जाएंगे।

जानिए शरीर में फाइबर की कमी के क्या हैं संकेत

आपके शरीर की कार्यप्रणाली के सही तरह से संचालन के लिए जिस प्रकार आपको प्रोटीन, विटामिन और मिनरल्स की आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार फाइबर भी बेहद आवश्यक होता है। आमतौर पर लोग इस ओर ध्यान नहीं देते। दरअसल, फाइबर एक अपचनीय कार्बोहाइड्रेट है जो आपके शरीर को ठीक से काम करने में मदद करता है। अगर आपके शरीर में पर्याप्त मात्रा में फाइबर नहीं होता तो इससे आपको कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

बढ़ता वजन : जो लोग अपनी बॉडी और लुक को लेकर कॉन्शियस रहते हैं, उन्हें तो विशेष रूप से फाइबर की उच्च मात्रा अपने आहार में रखनी चाहिए। दरअसल, फाइबर के कारण आपको हमेशा पेट भरे होने का अहसास होता है और आप अतिरिक्त कैलोरी का सेवन करने से बच जाते हैं। इसलिए अगर अत्यधिक कैलोरी के सेवन से आपका वजन लगातार बढ़ रहा है तो यह संकेत है कि आपके शरीर में फाइबर की कमी हो गई है।

कब्ज की शिकायत : फाइबर आपके पाचन तंत्र पर व्यापक प्रभाव डालता है। अगर आपके शरीर में फाइबर की कमी हो जाती है तो इससे आपको न सिर्फ मलत्याग में परेशानी होती है, बल्कि कब्ज होने की संभावना भी बढ़ जाती है।

बढ़ता कोलेस्ट्रोल : अगर आपके शरीर में कोलेस्ट्रोल का स्तर उच्च रहता है तो यह संकेत हैं कि आप अपने आहार में पर्याप्त मात्रा में फाइबर नहीं ले रहे हैं। दरअसल, फाइबर ट्राइग्लिसराइड्स कम करने में मदद करता है और साथ ही यह गुड कोलेस्ट्रोल के स्तर को भी बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त उच्च-फाइबर युक्त खाद्य पदार्थ आपको ब्लड प्रेशर व हृदय संबंधी अन्य समस्याओं से भी राहत दिलाते हैं।

सुस्ती का अहसास : अक्सर जब आप हैवी भोजन करते हैं तो आपको सुस्ती का अहसास होता है। लेकिन अगर आपको हमेशा ही भोजन के बाद नींद आने का अहसास होता है और आप नैप लेते हैं तो यह भी फाइबर की कमी का संकेत है। दरअसल, फाइबर आपके रक्त में शर्करा के स्तर को स्थिर बनाए रखने के लिए आवश्यक होता है और जब यह अस्थिर होता है तो आपको हमेशा ही सुस्ती का अहसास होता है।

बार-बार भूख लगना : जैसा कि हम आपको बता चुके हैं कि फाइबर को पचाने में शरीर को समय लगता है। जिससे आपको काफी समय तक पेट भरे होने का अहसास होता है। लेकिन अगर आपको भोजन करने के कुछ देर बाद ही भूख का अहसास हो रहा है तो यह संकेत है कि आपके आहार में फाइबर की कमी है और अब आपको फाइबर युक्त भोजन करने की आवश्यकता है।

स्फूर्तिदायक मॉकटेल

गर्मियों को मात देने वाले पेय पदार्थ

तापमान में धीरे-धीरे बढ़ोत्तरी होने लगी है, लेकिन गर्मी दूर करने के लिए आपको हमेशा 208 कैलोरी वाली ठंडी बीयर की आवश्यक नहीं हैं। न ही जब आप बाहर से आकर घर में प्रवेश करें, तो अधिक बर्फ के साथ एक गिलास ठंडा पेय पीने की जरूरत है। इन गर्मियों में, एक स्वस्थ जीवनशैली का चयन करें और नीचे दिये गए इन मॉकटेल को अपनी दैनिक दिनचर्या में शामिल करें। पूरे दिन लंबे समय तक काम करने के बाद, आप इनमें से किसी भी शराब-रहित शीतल पेय को चुन सकते हैं। अपने फलों के मिश्रण को तैयार करें और इन पेय पदार्थों को बनाना सीखें :

ब्लड औरेंज एंड जिंजर सोडा

क्या आपको अपने पेय को एक चटपटे तरीके से बनाना पसंद हैं। तो कुछ नारंगी रंग के संतरे को कुचल (स्क्वैश) लें और उसमें थोड़ी सी अदरक डालें। (जिंजर सोडा तैयार करना कठिन नहीं हैं, पानी में चीनी और अदरक एक साथ डालकर उबालें और इसे छान लें, इस पानी में सोडा डालें और उसके बाद आपका जिंजर सोडा तैयार है)। पेय को और अधिक ताजा बनाने के लिए कुछ पुदीने की पत्तियों को साथ में डाल सकते हैं। शीघ्र और कम से कम समय में बहुत ही कम सामग्री के साथ बने इस पेय को आप अपने पसंदीदा पेय में से एक बना सकते हैं। आपको इसके लिए केवल ताजे संतरों की जरूरत है और ये आपकी सेहत के लिए एक बेहतर पेय हैं।

वाटरमेलन-लाइम सोडा

गर्मियों में जब प्यास बुझाने और अपने दिमाग को ठंडा करने की बात आती है तो पानी से भरपूर तरबूज से बेहतर कुछ भी नहीं है। एक जार में तरबूज के टुकड़ों का मिश्रण तैयार करें और बीजों को निकालने के लिए एक छन्नी का उपयोग करें (यदि आप इसे थोड़ हल्का बनाना चाहते हैं, तो इसकी गूदा तैयार करें)। इसके बाद, अपने स्वाद के अनुसार, स्वादयुक्त (फ्लेवरड) सोडा डालें। यदि आपके पास चीनी का मिश्रण तैयार है, तो आप इसे भी डाल सकते हैं। अंत में नींबू का रस डालें जो इसके स्वाद को और बढ़ा देगा।

कुकुम्बर मोजीतो

खीरा शरीर को ठंडा रखता है, आपने पहले भी सुना होगा। गुणों से भरपूर खीरे को राहत और शीतलता प्रदान करने के लिए जाना जाता है, इतना ही नहीं लोग खुद को तरोताजा रखने के लिए खीरे के टुकड़ों का इस्तेमाल अपनी आंखों पर करते हैं। आप शराब-रहित ताजा कुकुम्बर मोजीतो भी तैयार कर सकते हैं। खीरे के रस में नींबू का रस और पुदीने की पत्तियों डालें। इन पत्तियों को सबसे ऊपर रखें। पर्यावरण की तरह हरा-भरा अपना पेय तैयार करें।

मैंगो लस्सी

आपकी गर्मियां तब तक समाप्त नहीं होती हैं जब तक आप एक स्वादिष्ट लस्सी का आनंद नहीं लेते हैं। यहाड्ड इसी प्रकार के ऐसे ही पेय पदार्थ के बारे में बता रही हूँ, जिसका स्वाद आपने अभी तक नहीं लिया होगा। आम, दही, पानी और चीनी (या चाशनी) को एक साथ मिलाएं। इसका स्वाद बहुत ही स्वादिष्ट होगा। यदि आपको नमकीन पेय पसंद करते हैं, तो आप इसमें चीनी के बजाय केले और थोड़ा सा नमक डाल सकते हैं। जब आप गर्म और मसालेदार भोजन कर रहे हों, तो यह पेय आपको एक अच्छा स्वाद प्रदान करेगा।

वाइल्डकैट कूलर

ऐसा कौन है जो ब्लूबेरी पसंद नहीं करता होगा? थोड़े पानी में चीनी और ब्लूबेरी एक साथ उबालकर शरबत बनाएं। सबसे पहले, आपको इस पेय में स्वाद लाने के लिए एक गिलास में नींबू का रस डालना होगा और फिर उसमें 1 या 2 औंस (लगभग 50 ग्राम) ब्लूबेरी शरबत डालें। इसके बाद, गिलास को पानी से भर दें। बर्फ और पुदीने की पत्तियों को इसके ऊपर रखें और आपका वाइल्डकैट कूलर पेय तैयार है।

यदि आपके बच्चे सॉफ्ट ड्रिंक के आदी हैं, तो ये पेय पदार्थ स्वस्थ विकल्प के रूप में कार्य करेंगे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि बच्चे ठंडक प्रदान करने वाले इस स्वादिष्ट पेय को पीना पसंद करेंगे और बाजार में उपलब्ध अन्य स्वाद वाले पेय को पीने से बचेंगे। अपने रसोईघर में थोड़े नए पेय पदार्थ बनाये और बिल्कुल भी हैरान न हों, जब आपके दोस्त अगले दोपहर के भोजन पर आपकी प्रशंसा करें।

बैंकिंग जगत से उत्तर प्रदेष के विकास में सहयात्री बनने का योगी का आवाहन

लोक पहल

लखनऊ। देश की सबसे बड़ी आबादी वाले राज्य उत्तर प्रदेश के विकास में कंधे से कंधा मिलाकर चलने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने देश के बैंकिंग और वित्तीय जगत का आह्वान किया है। उत्तर प्रदेश को +1 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनाने के बड़े लक्ष्य के साथ दो दिवसीय दौरे पर मुंबई पहुंचे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ बैंकिंग जगत के दिग्गजों की बैठक हुई। इस अवसर पर मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि मुझे पता है कि आप सभी न केवल अपने बैंक पर नजर रखते हैं बल्कि हमारे उत्तर प्रदेश पर भी आपकी नजर है। आप वहां की हर खबर रखते हैं। आप हमारी विकास यात्रा के साक्षी भी हैं और सहभागी भी। उत्तर प्रदेश आकार में भारत का चौथा सबसे बड़ा राज्य है। सबसे बड़ी आबादी वाले राज्य के साथ.साथ हम सबसे ज्यादा युवा जनसंख्या वाले प्रदेश हैं। यह युवा हमारी ताकत है, हमारी पूंजी है। यहां की उर्वर भूमि हमारे प्रदेश की समृद्धि का अहम साधन है। 2017 में जब हमारी सरकार बनी तब प्रदेश की माली हालत बहुत खराब थी। हमने कुछ योजनाएं बनाई, बैंकों को फोन किया, लेकिन क्रेडिट इतनी खराब थी कि बैंकों ने रिस्पॉन्स नहीं दिया।

आज यह बताते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है कि तब और अब के यूपी में सब बदल गया है। आज हम रेवेन्यू सरप्लस स्टेट हैं। हमने अपने वार्षिक बजट को दोगुने से ज्यादा तक विस्तार दिया है। बीते लगभग पांच वर्षो के भीतर उत्तर प्रदेश सरकार वायु, जल, सड़क एवं रेल नेटवर्क के माध्यम से बेहतर कनेक्टिविटी के लिए त्वरित गति से बुनियादी ढांचे का विकास कर रही है, जिससे उद्योगों को वैश्विक एवं घरेलू बाजार तक पहुंच बनाने में लॉजिस्टिक्स की सुलभता में वृद्धि होगी। उत्तर प्रदेश बड़ा राज्य है तो हमारे सामने चुनौतियां भी बहुत हैं। ये चुनौतियां हमें अपने लिए बड़े लक्ष्य तय करने और कड़ी मेहनत के लिए प्रोत्साहित करती है। कोविड के लिए हमारी प्रबंधन नीति को विश्व स्वास्थ्य संगठन सहित अनेक वैश्विक संस्थाओं ने सराहा है। तमाम चुनौतियों के बाद भी उत्तर प्रदेश आज पॉवर सरप्लस और रेवेन्यू सरप्लस स्टेट के रूप में अपने बड़े लक्ष्यों के साथ लगातार आगे बढ़ रहा है। हम राज्य में अनेक औद्योगिक परियोजनाओं पर काम कर रहे हैं।

प्रदेश में भारी मात्रा में पकड़ी गई जीएसटी चोरी

गोरखपुर मंडल प्रदेश में अव्वल, 20 मंडलों में टीम ने चलाया था अभियान

लोक पहल

गोरखपुर। वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) पकड़ने में गोरखपुर मंडल की टीम प्रदेश में अव्वल रही है। दूसरे पर कानपुर और तीसरे पर नंबर पर गौतमबुद्ध नगर की टीम रही। गोरखपुर मंडल की टीम ने लक्ष्य से छह गुना अधिक टैक्स चोरी पकड़ी है। कानपुर और गौतमबुद्ध नगर मंडल की टीम ने लक्ष्य के सापेक्ष दो से ढाई गुना अधिक टैक्स चोरी पकड़ी है।

जीएसटी गोरखपुर मंडल को 50 लाख रुपये का लक्ष्य मिला था। विभाग ने 200 व्यापारियों को चिह्नित कर जांच की। इसके बाद 166 व्यापारियों को कर चोरी करते पकड़ा। इनसे 3.17 करोड़ रुपये टैक्स जमा करवाया। शासन ने सबसे अधिक टैक्स देने वाले राज्य कर विभाग

को खास प्राथमिकता में रखा है। विभाग के सभी जोनल, एडिशनल कमिश्नरों के कामों को चार श्रेणी में बांट कर कार्य किया गया। इनमें दिसंबर में वस्तु एवं सेवा कर का गोपनीय जांच दल प्रदेश में अव्वल पर रहा। अधिकारियों ने रणनीति बनाकर टैक्स चोरी के आंकड़ों को पहले संकलित किया। अभियान में एक साथ छापा मारकर कर चोरी पकड़ी और राजस्व को सरकारी कोष में जमा करवाया।

शासन की तरफ से जीएसटी विभाग को चार लक्ष्य दिए गए थे। पहला जीएसटी संग्रह, दूसरा टैक्स चोरी, तीसरा विशेष जांच टीम एसआईबी की कार्रवाई और चौथा मंडल में अपंजीकृत व्यापारियों की संख्या को बढ़ाना था। टैक्स चोरी के साथ बड़ी संख्या में अपंजीकृत व्यापारियों का पंजीकरण करवाया गया।

आगरा, अलीगढ़, अयोध्या, बरेली, इटावा, गौतमबुद्ध नगर, गाजियाबाद, गोरखपुर, झांसी, कानपुर प्रथम व द्वितीय, लखनऊ प्रथम व द्वितीय, मेरठ, मुरादाबाद, प्रयागराज, सहारनपुर, वाराणसी प्रथम व द्वितीय मंडल में अभियान चलाया गया।

31 मार्च तक ओबीसी आरक्षण का ट्रिपल टेस्ट पूरा कराना एक बड़ी चुनौती

समय सीमा में पूरा हुआ टेस्ट तो अप्रैल में हो सकेंगे निकाय चुनाव

लोक पहल

लखनऊ। नगर निकाय चुनाव में ओबीसी आरक्षण के मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट से प्रदेश सरकार को राहत भले ही मिल गई हो लेकिन उच्चतम न्यायालय द्वारा दी गई समय सीमा के अंदर ओबीसी आरक्षण के लिए ट्रिपल टेस्ट की प्रक्रिया को पूरा करना सरकार के साथ–साथ आयोग के लिए भी एक बड़ी चुनौती होगी। हालांकि सरकार द्वारा गठित आयोग ने काम करना शुरू कर दिया है फिर भी इसके लिए तीन महीने में यह काम पूरा करना मुश्किल होगा।

बहरहाल, सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद साफ हो गया है कि ओबसी आरक्षण के संबंध में नगर विकास विभाग द्वारा 5 दिसंबर को मेयर और चेयरमैन सीटों के लिए जारी अनंतिम अधिसूचना का अस्तित्व अब समाप्त हो गया है। इसलिए निकाय चुनाव के लिए अब नये सिरे से आरक्षण तय करना होगा और यह काम 31 मार्च तक ही करना होगा। हालांकि आयोग की रिपोर्ट आने के बाद ही सीटों और वार्डों के आरक्षण की प्रक्रिया शुरू हो पाएगी, इसलिए आयोग को अपनी रिपोर्ट तेजी से देनी होगी। वहीं नगर विकास विभाग को भी तेजी से सभी तैयारियां पूरी करने के लिए भी कह दिया गया है।

बता दें कि ओबीसी आरक्षण से संबंधित याचिका पर इलाहाबाद हाईकोर्ट के आदेश के खिलाफ प्रदेश सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल की थी। जिस पर सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगाते हुए राज्य सरकार द्वारा गठित आयोग को 31 मार्च तक ओबीसी पर रिपोर्ट देने को कहा है। वहीं निर्धारित समय में आयोग की रिपोर्ट आने के बाद शासन को आरक्षण तय करने में 15 से 20 दिन तक का समय लग सकता है। इसके बाद अनंतिम अधिसूचना जारी होगी, जिस पर एक सप्ताह के भीतर आपत्ति और सुझाव मांगे जाएंगे और उसका निस्तारण किया जाएगा। तब अंतिम अधिसूचना जारी हो पाएगी। ऐसे में अप्रैल के अंत तक ही चुनाव संभव है।

उप्र राज्य स्थानीय निकाय समर्पित पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष जस्टिस ;रिटायर्डद्ध राम अवतार सिंह का कहना है कि सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के मुताबिक तय समय सीमा के भीतर पिछड़ों के आरक्षण की रिपोर्ट तैयार कर ली जाएगी।

सांसद मिथिलेश कुमार ने सड़कों की मरम्मत के लिए पीडब्ल्यूडी मंत्री को लिखा पत्र

लोक पहल

शाहजहांपुर। जिले में जर्जर हो रही सड़कों के निर्माण और मरम्मत कार्य को लेकर राज्यसभा सांसद मिथिलेश कुमार ने लोक निर्माण मंत्री जितिन प्रसाद को एक पत्र लिखकर सड़कों के निर्माण और मरम्मत कराये जाने की मांग की है।

सांसद मिथिलेश कुमार मंत्री जितिन प्रसाद को पत्र के माध्यम से अवगत कराया है कि जनपद शाहजहांपुर की विधानसभा क्षेत्र पुवायां के अंतर्गत संपर्क मार्ग प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत कई वर्षों पूर्व निर्मित हुए थे। जिनकी हालत बहुत खराब है जबकि संपर्क मार्ग एक जनपद से दूसरे जनपद को जोड़ते हैं। सांसद ने अवगत कराया कि पुवायां खुटार राष्ट्रीय राजमार्ग जेवा अगौना बुजुर्ग और राजेपुर होते हुए मोहम्मदी जनपद लखीमपुर खीरी पीएमजीएसवाई संपर्क मार्ग, पुवायां से नाहिल शाहजहांपुर

चपरउवा घाट और बमरौली होते हुए बिलसंडा जनपद पीलीभीत पीएमजीएसवाई संपर्क मार्ग को क्षेत्रीय जनता की समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए जनहित में मार्गों का चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण कराने की मांग की है।

साथ ही उन्होंने तहसील पुवायां के आवागमन समस्या निदान हेतु क्षतिग्रस्त संपर्क मार्गो को बनवाने की मांग की है।

कमिश्नर साहब मेरा तोता दिलवा दो!

लोक पहल

आगरा। आगरा में अफ्रीकी तोते को लेकर एक अनोखा विवाद पुलिस के पास पहुंचा है। तोते को अपना बताने वाले मुनेंद्र जैन ने पुलिस आयुक्त डॉ प्रीतिंदर सिंह को प्रार्थना पत्र दिया। उन्होंने कहा कि पुलिस ने अजय कुमार वर्मा को तोता सौंप दिया, जबकि तोता उनका है। वह उन्हें मिलना चाहिए। साहब, मेरा बाबू (तोता) मुझे दिला दो। मामले में पुलिस आयुक्त ने जांच के आदेश किए हैं।

बल्केश्वर की पंजा पजाया कॉलोनी के रहने वाले सेवानिवृत्त कृषि अधिकारी अजय कुमार वर्मा और मुनेंद्र जैन के बीच तोते को लेकर विवाद है। मुनेंद्र जैन का कहना है कि अफ्रीकी तोता उनका है। चार साल पहले वह घर से बाहर जा रहे थे। इस पर वो तोते को पड़ोस में रहने वाले अजय कुमार वर्मा को देकर चले गए। इसके बाद उन्होंने तोते को वापस नहीं किया। अब वो तोता वापस लेना चाहते थे।

मुनेंद्र जैन ने 15 दिसंबर 2022 को पुलिस से शिकायत की थी। कहा था कि पुलिस तोता उन्हें दिलाएं। थाना कमला नगर पुलिस ने दोनों पक्षों को बुलाया। दोनों पक्षों से बातचीत की गई। अजय कुमार की बेटी मुनमुन तोते को लेकर रो रही थी। उधर, तोता बोल रहा था कि मुनमुन कहां हो? इसी आधार पर पुलिस ने फैसला कर दिया। तोता अजय को सौंप दिया।

मुनेंद्र जैन ने यह भी बताया कि दोनों पक्ष में एक लिखित समझौता भी हुआ था। इसमें तय हुआ था कि अजय कुमार उन्हें पूर्व के लिए 13 हजार रुपये देंगे। इसके साथ ही दस दिन के लिए तोता देंगे। वह पूरी तरह तोते का ख्याल रखेंगे।

तोता अगर, खाना नहीं खाएगा तो वो उसे वापस कर जाएंगे। मगर, पुलिस की वजह से समझौते की बात पर अमल नहीं किया जा सका। अब तोता वो वापस चाहते हैं। पुलिस आयुक्त डॉ प्रीतिंदर सिंह ने बताया कि मामले में थाना कमला नगर पुलिस को जांच कर कार्रवाई के आदेश किए गए हैं।

चंपत राय ने की राहुल गांधी की प्रशंसा

लोक पहल

अयोध्या। अयोध्या स्थित श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा की सराहना की। उन्होंने कहा, एक नौजवान (कांग्रेस सांसद राहुल गांधी) इस ठंड में देश में पैदल चल रहा है, ये प्रशंसनीय है। 50 साल का एक नौजवान देश को समझ रहा और 3,000 किमी पैदल चल रहा है तो हम इसकी प्रशंसा ही करेंगे। उन्होंने पत्रकारों से कहा, 'मैं तो कहता हूं कि आप सबको भी हिंदुस्तान की पदयात्रा करके भारत का अध्ययन करना चाहिए।' इससे पहले राम जन्म भूमि के मुख्य पुजारी आचार्य सत्येंद्र दास ने भी अपना समर्थन दिया था।

फैजाबाद सर्किट हाउस में देर शाम ट्रस्ट की बैठक में शामिल होने के बाद 'भारत जोड़ो यात्रा' को लेकर पत्रकारों के सवालों का जवाब देते हुए चंपत राय ने कहा, 'देश में पैदल चल रहे एक युवक का मैं आभार व्यक्त करता हूं, मैं उसके इस कदम की सराहना करता हूं। राय ने कहा इसमें कुछ भी गलत नहीं है। मैं आरएसएस का कार्यकर्ता हूं और आरएसएस कभी भी 'भारत जोड़ो यात्रा' की निंदा नहीं करता।

कड़ाके की ठंड में देर रात सड़कों पर निकले नगर आयुक्त संतोष शर्मा

रैन बसेरों और अलाव की स्थिति का लिया जायजा

लोक पहल

शाहजहांपुर। शहर में रैन बसेरों में लोगों को सुविधाएं मिल रही हैं कि नहीं शहर में अलाव जल रहे या नहीं इसका जायजा लेने के लिए नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा ने देर रात सड़कों पर निकल पड़े सबसे पहले उन्होंने रोडवेज पर अस्थायी रैन बसेरा का आकस्मिक निरीक्षण किया तथा रैन बसेरा में शुद्ध पेयजल, प्रकाश, सफाई, रजाई, गद्दे, कंबल, तकिया इत्यादि व्यवस्था को देखा। अस्थायी रैन बसेरे में 21 व्यक्ति आवासित मिले। इस दौरान नगर आयुक्त संतोष शर्मा ने रेन बसेरा में रुके लोगों से कोविड गाइडलाइन का पालन करने को कहा व स्वच्छता व सैनिटाइजेशन को नियमित रूप से करने के विशेष दिशा.निर्देश दिये। इसके उपरांत नगर आयुक्त ने शहर में भ्रमण कर अलाव की स्थिति को जानने के लिए रेलवे स्टेशन, रोडवेज, टाउन हॉल स्थित रैन बसेरा, खिरनी बाग एवं लाल इमली चौराहा में नगर निगम के द्वारा लगवाये गये अलावों की स्थिति को देखा और आवश्यक निर्देश दिए।

पसमांदा मंच के राष्ट्रीय प्रभारी का स्वागत, कई पदाधिकारियों को मिली अहम जिम्मेदारी

लोक पहल

शाहजहांपुर। भारतीय मुस्लिम पसमांदा मंच के राष्ट्रीय संरक्षक बासित अली व राष्ट्रीय प्रभारी हाजी जहीर अहमद का स्वागत किया गया। साथ ही नवनियुक्त पदाधिकारियों की घोषणा भी की गई। शहर के एक होटल में भारतीय मुस्लिम पसमांदा मंच के राष्ट्रीय संरक्षक बासित अली, राष्ट्रीय प्रभारी हाजी जहीर अहमद और राष्ट्रीय महामंत्री सरताज मंसूरी की उपस्थिति में जलालाबाद निवासी बहार अहमद को भारतीय मुस्लिम पसमांदा मंच के युवा प्रकोष्ठ का प्रदेश अध्यक्ष मनोनीत किया गया। इसके अलावा मीरपुर पीलीभीत निवासी मोहम्मद शाहरूख को पश्चिमी उत्तर प्रदेश का मीडिया प्रभारी, पीलीभीत के मोहम्मद इस्त्याक को अध्यक्ष ब्रज प्रांत तथा हरदोई निवासी दिलदार अली को जनपद हरदोई का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। सभी को फूलमाला पहनाकर मुबारकबाद दी गई। नवनियुक्त पदाधिकारियों से आशा व्यक्त की गई कि सभी पदाधिकारी पसमांदा तबके के लोगों के हितार्थ कार्य करेंगे। इस मौके पर शाह आलम, सईद खां फलाही, नदीम, रूकैया बेगम, यासीन खां, शहजाद आलम, अंकुर गांधी, फैसल, शुएब आदि मौजूद रहे।

कड़ाके की ठंड में सड़कों पर उतरी 'यूनिटी' संस्था की महिलाएं

जरुरतमंदों को बांटे कंबल, ऊनी कपड़े और खाद्य सामग्री

लोक पहल

शाहजहांपुर। समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहने वाली संस्था 'यूनिटी' की महिलाएं कड़ाके की ठंड में संस्था की संरक्षक डा संगीता मोहन के नेतृत्व में सड़कों पर निकल पड़ी और रास्ते में जिसको जो जरुरत हुआ वह उपलब्ध कराया। टाउन हॉल, रोडवेज, रेलवे स्टेशन पर संस्था ने चाय, बिस्कुट, ब्रेड, बांटने के साथ ही जरुरतमंद लोगों को ऊनी कपड़े, कंबल आदि उपलब्ध कराकर भीषण ठंड से राहत दिलाने का काम किया। इस मौके पर संस्था की संरक्षक डा संगीता मोहन ने कहा कि संस्था समाज के हर जरुरतमंद की सेवा के लिए हमेशा तैयार रहती है, आज संस्था की ओर से तमाम सामान का वितरण किया गया है संस्था आगे भी इसी तरह जरुरतमंद लोगों की सेवा करती रहेगी, इस दौरान संस्था की अध्यक्ष एकता अग्रवाल, राजुल टंडन, रचना आदि मौजूद रहीं।

साबित्री बाई फुले ने जगाई महिला शिक्षा की अलख

लोक पहल

शाहजहांपुर। भारत की प्रथम महिला शिक्षिका, समाज सुधारिका एवं मराठी कवियत्री माता साबित्री बाई ज्योतिवाराव फुले का 192 वां जन्म दिवस आज अखिल भारतीय अनुसूचित जाति/जनजाति कर्मचारी कल्याण एसोसिएशन के तत्वावधान में शांतिदेवी उच्चतर माध्यमिक विद्यायल हथौड़ा बुजुर्ग में संपन्न हुआ।

समारोह के अध्यक्ष राम बहादुर तथा अन्य अतिथिगणों ने तथागत गौतम बुद्ध, बाबासाहेब डा0 अम्बेडकर, ज्योतिबा फुले व सावित्री बाई फुले के चित्रों पर पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मुख्य अतिथि के रूप में पंचशील सोशल वेलफेयर सोसाइटी के जिलाध्यक्ष राम सिंह तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में वरिष्ठ कवि ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान' ने शिक्षा के क्षेत्र में सावित्रीबाई फुले के योगदान की चर्चा करते हुए कहा कि तत्कालीन विषम परिस्थितियों में भी सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं को लेकर चली आ रही कुप्रथाओं के विरुद्ध संघर्ष किया और सफलता पाई। शिक्षा का महत्व कभी भी कम नहीं होगा। बालिकाओं की शिक्षा पर आज भी ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

संगठन के संरक्षक अमर सिंह, जिलाध्यक्ष हरिशंकर कनौजिया, कोषाध्यक्ष संजीव कुमार, अधिवक्ता व पत्रकार अनूप कुमार, गाडगे हुंकार न्यूज़ के प्रेम सिंह, राकेश यादव, अखिलेश माथुर, कमलेश निगम ने सामाजिक समरसता पर बल देते शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर अंचल कनौजिया, उदयवीर, उत्तम कुमार, संजय कुमार, राकेश कुमार, दिनेश कुमार, राकेश कुमार रंजन, निर्दोष गौतम, विनोद कुमार, प्रेमपाल राजपाल, अरविन्द कुमार, सूरज कुमार, इंदु सक्सेना, वीरेंद्र कुमार, पृथ्वीराज, बाबू सिंह, अजय प्रताप सिंह, महेशचंद्र, पूनम, सुरेश चंद्र भारती आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन संगठन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अजय माथुर ने किया।

ज़िले के कलाकारों ने हरदोई में किया 'किंग लियर' का मंचन

किंग लियर की भूमिका में आलोक सक्सेना का उत्कृष्ट अभिनय

लोक पहल

शाहजहांपुर। ज़िले के रंगकर्मियों ने अपनी अभिनय प्रतिभा से पड़ोसी ज़िले हरदोई के दर्शकों और समीक्षकों पर अमिट छाप छोड़ी है। जिला प्रशासन हरदोई के आमंत्रण पर शहर के एम एल आर थियेटर फाउंडेशन के कलाकारों के दल ने संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से रसखान प्रेक्षागृह के मंच पर विलियम शेक्सपियर कृत विश्वविख्यात त्रासदी नाटक किंग लियर का सफल मंचन किया, सीडीओ हरदोई आकांक्षा राना के संयोजन में मुख्य अतिथि डी एम मंगला प्रसाद सिंह व विशिष्ठ अतिथि एसपी राजेश द्विवेदी ने दीप प्रज्जवलित कर शुभारंभ किया। प्रख्यात लेखक डा हरिवंश राय बच्चन द्वारा अनुवादित और अंतर्राष्ट्रीय निर्देशक आर पी डी सोती द्वारा निर्देशित नाटक में ब्रिटेन के सम्राट लियर की त्रासदी को विभिन्न घटनाक्रमों से प्रस्तुत किया गया। यह नाटक मानव की संवेदनाओं और भावनाओ जैसे प्रेम, करुणा, ममता, क्रोध, अहंकार, ईर्ष्या, घृणा, बदला आदि को नाटक के विभिन्न पात्रों के माध्यम से उद्‌घाटित करता। केन्द्रीय पात्र सम्राट लियर अपना सारा साम्राज्य अपनी स्पष्ट वक्ता छोटी पुत्री से नाराज होकर अपनी दो पुत्रियों को सौंप देता है, संपत्ति पाने के बाद चाटुकार संताने अपने पिता को किस तरह उपेक्षित कर दीन दशा में पहुंचा देती हैं यह नाटक में बहुत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया। मंचन में रंगकर्मी आलोक सक्सेना ने किंग लियर, शालू यादव–गोनेरिल, अनामिका वर्मा–रीगन, रानी मिश्रा–कॉरडीलिया, अमित कुमार–अलबानी, लक्ष्मण मिश्रा–कॉर्नवाल, दुर्गेश कुमार–विदूषक, अंकित सक्सेना–ग्लास्टर, ज़ैद सिद्दीकी–केन्ट, प्रकाश गंगवार–एडगर, सौमित्र शुक्ला–एडमंड, कपिल देव–फ्रांस राजा, कृष्ण कुमार–बरगंडी राजा, जय सिंह–ओसवाल्ड, निखिल राना–भद्र पुरुष, अभय दत्त बाजपेई–सामंत और वृद्ध पुरुष, रागिनी वर्मा–डॉक्टर, रोहित वर्मा–दूत ब्रिटेन, हर्षित तिवारी–दूत फ्रांस, सुमित राना–क्यूरन, शुभ शर्मा–उद्‌घोषक, इमरान, दुर्गेश शर्मा मुदस्सिर अहमद सैनिक ब्रिटेन व फ्रांस की भूमिकाओं मे रहे।

मंच पर रवि चौहान–एसोसिएट डायरेक्टर व लाइट डिजाइनर, सौमित्र शुक्ला–असिस्टेंट डायरेक्टर, श्रीकांत वर्मा–मंच प्रबंधक, धर्मेन्द्र सिंह सिसोदिया–प्रचार प्रबंधक व पोस्टर डिजाइनर, ज़रीफ मलिक आनंद–मार्गदर्शन, संकल्प अग्निहोत्री, अनुज सिंह, आशीष बून, राम श्रीवास्तव, कार्तिक शुक्ला, सौरभ का सहयोग रहा। सम्पूर्ण परिकल्पना, दृश्यबंध व निर्देशन रमापति द्विविद सोती ने किया।

सुदूर क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्ष देने का कार्य कर रहा है इग्नू : डा. मनोरमा सिंह

शाहजहांपुर अध्ययन केन्द्र पर इग्नू का बीएड पाठ्यक्रम पुनः संचालित

लोक पहल

शाहजहांपुर। देश के सुदूर क्षेत्रों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को पहुँचाने का कार्य इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय कर रहा है। इग्नू का बीएड पाठ्यक्रम सेवाकालीन शिक्षकों में शिक्षण कौशल विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह विचार इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र लखनऊ की वरिष्ठ क्षेत्रीय निदेशक डॉ मनोरमा सिंह ने व्यक्त किए। डॉ सिंह इग्नू अध्ययन केन्द्र शाहजहाँपुर द्वारा आयोजित वर्चुअल परिचय सभा में उपस्थित छात्राध्यापकों को सम्बोधित कर रही थी।

डॉ सिंह ने कहा कि इग्नू के पाठ्यक्रम सेवापूर्व तथा सेवारत व्यक्तियों हेतु ज्ञान एवं कौशल विकास का सुलभ एवं उपयोगी माध्यम हैं। इग्नू की पुस्तकें विषय सम्बन्धित विशिष्ट अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराती हैं जोकि अतुल्य ज्ञान का भण्डार हैं। इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र लखनऊ के बीएड पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों ने अनेको बार विश्वविद्यालय परीक्षाओं में स्वर्ण पदक प्राप्त कर क्षेत्रीय केन्द्र को गौरवान्वित किया है। डॉ सिंह ने कहा कि हमें आशा है कि वर्तमान सत्र के छात्राध्यापक भी शाहजहाँपुर अध्ययन केन्द्र के मार्गदर्शन में स्वर्ण पदक प्राप्त करेंगे।

इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र लखनऊ की सहायक निदेशक डॉ रीना कुमारी ने कहा कि वर्तमान में उत्तर प्रदेश में केवल तीन केन्द्रों बनारस, लखनऊ तथा शाहजहाँपुर में बीएड पाठ्यक्रम संचालित हो रहा है।

समन्वयक डॉ प्रभात शुक्ल ने कहा कि जनपद में इग्नू द्वारा स्थापित अध्ययन केन्द्र अपने स्थापना वर्ष से ही इग्नू द्वारा दी जाने वाली गुणवत्तायुक्त उच्च शिक्षा को जन–जन तक पहुँचाने की दिशा में लगातार प्रयासरत् है। तकनीकी सत्र के अन्तर्गत डॉ अरविन्द शुक्ल द्वारा पीपीटी के माध्यम से छात्राध्यापकों को इग्नू के बीएड पाठ्यक्रम में समय–समय पर संचालित की जाने वाली गतिविधियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। पूर्व में वर्चुअल परिचय सभा का शुभारम्भ सरस्वती वन्दना से किया गया। अन्त में सभी का अभार डॉ मीना शर्मा ने व्यक्त किया। वर्चअल मीटिंग में शाहजहाँपुर अध्ययन केन्द्र से अनुभा मिश्रा, सुषमा मेहरोत्रा, बलराम बाजपेई, मुकेश कुमार सहित 50 छात्राध्यापक सम्मिलित हुए।

कोरोना महामारी में लोगों के लिए मसीहा बना बॉलीवुड

गरीबों को मुफ्त खाना खिला रही हैं जैकलीन

बॉलीवुड अभिनेत्री जैकलीन फर्नांडीस कोरोना महामारी संकट के समय गरीबों को मुफ्त में खाना खिला रही हैं। कोरोना वायरस की दूसरी लहर से पूरा देश परेशान है। जैकलीन कोरोना महामारी के बीच लोगों की मदद के लिए सामने आई है। जैकलीन एक एनजीओ के साथ मिलकर लगभग एक ला जरूरतमंद लोगों तक खाना पहुंचा रही हैं। हाल ही में जैकलीन की कई फोटो सामने आई है जिसमें वह मुंबई के एक फाउंडेशन के साथ मिलक लगभग एक लाख जरूर तम लोगों तक खाना पहुंचा रही हैं। जैकलीन अपने योलो फाउंडेशन और कई एनजीओ के साथ मिलकर आम लोगों की मदद कर रही है। साथ ही लोगों तक खाना पहुंचा रही हैं। हाल ही में जैकलीन ने 'रोटी बैंक फाउंडेशन' की रसोई का दौरा किया जिससे वह जायजा ले सकें कि लोगों की मदद ठीक से हो रही है कि नहीं। रोटी बैंक टीम और येलो टीम के साथ मिलकर जैकलीन ने खाना बनाने का काम किया और साथ ही लोगों के बीच खाना भी बांटा।

लोगों की मदद के लिए आगे आए करण जौहर

बॉलीवुड के जानेमाने फिल्मकार करण जौहर कोरोना महामारी संकट के समय लोगों की मदद के लिये आगे आये हैं। कोरोना महामारी का कहर पूरे देश में भयाभय रूप में देखने को मिल रहा है। कोरोना के हालातों को देखकर बॉलीवुड के सेलेब्स आगे आकर लोगों की मदद भी कर रहे हैं। अब इस लिस्ट में करण जौहर भी शामिल हो गए हैं। कोविड 19 सम्बंधित टीकाकरण प्रक्रिया और मानसिक स्वास्थ्य की जानकारी के लिए अब करण जौहर के धर्मा प्रोडक्शंस के सोशल मीडिया पेजों का उपयोग किया जाएगा। धर्मा प्रोडक्शंस ने युवा के लीड, संसाधनों और सत्यापित जानकारी का लाभ उठाते हुए, अपने सोशल प्लेट फ का विस्तार क उनके तरफ से इन सुविधाओं क ज्यादा से ज्यादा लोगो तक पहुंचाने में मदद करने के लिए एक क दम

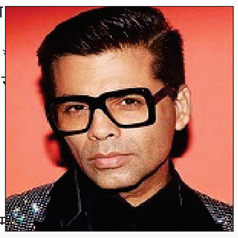

उठाया है। इसमें बताया गया है कि यदि आपके पास भारत में किसी के पास कोविड टीकाकरण की प्रक्रिया के बारे में कोई प्रश्न, संदेह या मदद की जरूरत है या फिर किसी भी तरह व मानसिक स्वास्थ्य समस्या है और आप इसके लिए मदद लेना चाहते है तो, टीम युवा और धर्मा इसे पूरा करने के लिए अपनी पूरी कोशिश करेंगे।

मजदूरों की मदद के लिये आगे आये आदित्य चोपड़ा

बॉलीवुड के जानेमाने फिल्मकार आदित्य चोपड़ा कोरोना महामारी संकट के समय डेली वेजेस वर्कर्स की मदद के लिये आगे आते हुये उनके खाते में पांच हजार रुपए ट्रांसफर करने जा रहे हैं। कोरोना महामारी की दूसरी लहर से फिल्म इंडस्ट्री थम-सी गई है। आदित्य चोपड़ा फिल्म इंडस्ट्री के हजारों दिहाड़ी कामगारों के खातों में सीधे तौर पर पैसे डालकर उनकी मदद करेंगे। कामगारों की मदद करने के इरादे से 'यश चोपड़ा साथी इनिशिएटिव' लॉन्च किया गया है। यश चोपड़ा फाउंडेशन इस पहल के तहत इंडस्ट्री की महिलाओं एवं वरिष्ठ नागरिकों के खाते में 5000 रुपए की राशि सीधे ट्रांसफर करेगा। इसके अलावा फाउंडेशन की तरफ से हर वर्कर की फैमिली को पूरे एक महीने के लिए राशन किट भी दिया जाएगा। यह राशन किट फाउंडेशन के पार्टनर एनजीओ यूथ फीड इंडिया के माध्यम से वितरित किया जाएगा। यशराज फिल्म्स की यह मदद हासिल करने के लिए जरूरतमंद लोग वेबसाइट यशचोपड़ाफाउंडेशनडॉटओआरजी पर जाकर एक ऑनलाइन एप्लीकेशन प्रक्रिया के माध्यम से तुरंत आवेदन भी कर सकते हैं।

दिहाड़ी मजदूरों के लिए सलमान खान ने खोला खजाना

हजारों की गिनती में दिहाड़ी मजदूर फिल्म इंडस्ट्री में काम करते हैं। एक बार फिर से सलमान खान ने इन सभी के लिए अपना खजाना खोल दिया है। पिछले साल की तरह इस बार भी सलमान खान इन सभी के लिए करोड़ों की व्यवस्था करने जा रहे हैं। उन्होंने अपने कंधे पर 25 हजार दिहाड़ी मजदूरों की उठाई जिम्मेदारी है। पिछले साल भी सलमान खान इसी तरह अपने मदद के हाथ आगे बढ़ाये थे और इस बार भी उन्होंने इसके लिए अपने कदम बढ़ा लिए हैं। एक न्यूज रिपोर्ट के अनुसार सलमान खान 25,000 दिहाड़ी मजदूरों को 1500 रुपए दान करेंगे। इस लिस्ट में वो लोग शामिल हैं जो कि मेकअप, स्टंटमैन, स्पॉटबॉयज और तकनीकी से जुड़ा काम फिल्म इंडस्ट्री में करते हैं। इस संबंध में फेडरेशन ऑफ वेस्टर्न सिने इंप्लॉइज के प्रेसिडेंट बीएन तिवारी ने जानकारी दी है। उन्होंने कहा है कि हमने सलमान खान को जरूरतमंदों की लिस्ट भेजी थी। तिवारी ने आगे बताया कि सलमान खान लोगों की जरूरत के हिसाब से पैसे जमा करने के लिए तैयार हैं। आपको बता दें कि कुछ दिन पहले सलमान ने ये जानकारी दी है कि वह अपनी फिल्म राधे की कमाई से वेंटिलेटर्स और ऑक्सीजन सिलेंडर खरीद कर दान करेंगे। रिपोर्ट अनुसार सलमान खान 25 हजार वर्कर्स के बीच 3.75 करोड़ दान करने वाले हैं। पिछले साल भी सलमान खान ने 25 हजार दिहाड़ी मजदूरों के खाते में पैसे जमा करवाए थे। वह इस बार फ्रंटलाइन वकर्स के लिए फूड पैकेट भी भेज रहे हैं।

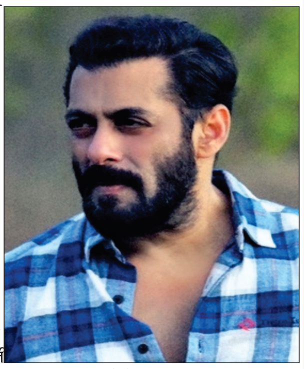

संभावना सेठ को आया गुस्सा

कोरोना वायरस का कहर देशभर में देखने को मिल रहा है। दवाइयां, बेड और ऑक्सीजन की कमी के चलते लोग परेशान हो रहे हैं। लेकिन इसी बीच इन्ही सब चीजों की काला बाजारी की बातें भी सामने आ रही हैं। जिससे लोग खासे परेशान हो रहे हैं। आम लोग तो हैं ही परेशान कई सेलेब्स जो लोगों की लगातार मदद कर रहे हैं वो भी इससे खासे परेशान हैं। इन्हीं सेलेब्स में भोजपुरी और हिंदी फिल्मों की अभिनेत्री संभावना सेठ का नाम भी शामिल है। अभिनेत्री संभावना सेठ और उनके पति अविनाश कोरोना काल में लगातार लोगों की मदद कर रहे हैं। ऐसे में अभिनेत्री और उनके पति भी दवाइयों की काला बाजारी से दो चार होना पड़ रहा है। इस बारे में आजतक से बात करते हुए संभावना ने गुस्सा जाहिर किया है। संभावना ने बताया कि आज मेरे साथ कुछ ऐसा ही हुआ। मैं और मेरे पति किसी पेशेंट के लिए ऑक्सीजन का बंदोबस्त कर रहे थे सामने वाले इंसान को ये नहीं पता था कि इस चैरिटी के पीछे हम हैं। इसी बात का फायदा उठाते हुए जिस शख्स को हमने उसके पास ऑक्सीजन लेने के लिए भेजा था, उस बेईमान इंसान ने मेरे भेजे हुए शख्स से भी पैसे ले लिए और इंतजाम भी नहीं किया। आगे संभावना ने गुस्सा जताते हुए कहा, ऐसे लोगों को शर्म नहीं आती। इस महामारी में भी लोग पैसे कमाने और फ्रॉड करने से बाज नहीं आ रहे। इनकी इंसानियत कहां है? जिस मां का बेटा वेंटिलेटर पर है, जो बार-बार मदद मांग रही है, जिसे हमने फ्री में ऑक्सीजन दिलाने का आश्वाशन दिया है, वो मां किसी उम्मीद से बार-बार मुझे कॉल कर रही है, रो रही है और ये लोग जिस ऑक्सीजन का खर्चा हम उठा रहे हैं उस परिवार की मदद करने के लिए उसमें भी ये लोग बेईमानी कर रहे हैं। संभावना ने आगे ये कहा कि ऐसे लोगों को तो जेल जाना चाहिए। मैंने इसीलिए ये वीडियो अपने इंस्टा अकाउंट पर डाला है कि लोग इस भ्रष्टाचार को देखें। हम लोगों को फ्री में ऑक्सीजन दे रहे हैं और वो उसी को बेच रहे हैं और जब पकड़ में आए, तो मांफी मांग रहे हैं। लेकिन जो इन्होंने किया है वो किसी भी तरह से माफी के लायक नहीं है। ऐसे लोगों को तो गिरफ्तार करना चाहिए।

दो और कोविड मेडिकल सेंटर्स खोलेंगे अजय

अजय देवगन कोविड-19 से निपटने के लिए बीएमसी के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। पिछले दिनों खबर आई थी कि अभिनेता ने एक मैरिजहॉल को 20 बेड वाली कोविड-19 फैसिलिटी में तब्दील कराया है। जिसमें वेंटिलेटर, ऑक्सीजन सपोर्ट और पैरा मॉनिटर्स लगाए गए हैं। इस काम में अजय देवगन के साथ, आनंद पंडित, बोनी कपूर, लव रंजन, समीर नायर, दीपक धर और बिजनसमैन तरुण राठी जैसे लोग शामिल हैं। जो एक साथ मिलकर मुंबई वालों को ये सुविधा मुहैया करवाने में जुटे हैं। ताजा रिपोर्ट्स की मानें तो अजय देवगन और प्रोड्यूसर आनंद पंडित मुंबई में ही दो और कोविड मेडिकल सेंटर्स शुरु करने वाले हैं। ये कोविड सेंटर्स जुहू और बोरीवाली में होंगे। आनंद पंडित ने इस बारे में बात करते हुए पिंकविला से कहा, दादर के बाद, हमने जुहू में एक स्कूल को कोविड सेंटर में बदल दिया है। 25 बेड वाली यह कोविड 19 फैसिलिटी जुहू में अगले हफ्ते से शुरू होगी। हालांकि यहां आईसीयू की सुविधा नहीं रहेगी, लेकिन ऑक्सीजन का इंतजाम रहेगा। उन्होंने कहा, बोरीवली सेंटर पर भी काम चल रहा है। अमिताभ बच्चन भी हमारी इस पहल से जुड़ सकते हैं। वह हमेशा नेक काम के लिए तैयार रहते हैं। बोरीवली सेंटर में भी 25 बेड्स का इंतजाम रहेगा। हम कई अस्पतालों के डॉक्टर्स और अन्य एक्सपर्ट्स की सलाह ले रहे हैं। इलाज का खर्चा पूरी तरह से हम उठाएंगे। निर्माता ने बताया कि इस पहल का आइडिया अजय देवगन ने दिया था। मुख्य तौर पर हम मुंबई के अलग अलग भाग में मेडिकल सुविधाएं मुहैया कराना चाहते हैं, जिससे लोगों को तुरंत मदद मिल सके।

रिपोर्ट दर्ज करवाने पर भड़कीं कंगना

टीएमसी के प्रवक्ता ऋजु दत्ता ने ट्विटर से कंगना रनोट के बेदखल होने के बाद उनके खिलाफ नफरत फैलाने के आरोप में पुलिस रिपोर्ट दर्ज करवायी है। एफआईआर पर अब कंगना ने प्रतिक्रिया दी है और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के खिलाफ सख्त टिप्पणी की है। कंगना अब ट्विटर पर नहीं हैं, इसलिए अब सारा संवाद इंस्टाग्राम स्टोरी के ज़रिए कर रही हैं। इंस्टाग्राम स्टोरी के ज़रिए ही लगातार पश्चिम बंगाल में हुई हिंसा के खिलाफ मोर्चा खोले हुए हैं। वहीं, दूसरे मुद्दों पर भी अपनी राय रख रही हैं। हालांकि, इंस्टाग्राम स्टोरी में ट्विटर की तरह कोई पोस्ट स्थायी नहीं रहती और 24 घंटों बाद खुद-ब-खुद चली जाती है। बहरहाल, शुक्रवार को कंगना ने अपने एफआईआर की फोटो अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी में शेयर करने के साथ लिखा- खून की प्यासी मॉन्स्टर ममता मुझे अपनी ताक़त से ख़ामोश करना चाहती है। एक अन्य इंस्टा स्टोरी पोस्ट में कंगना रनोट ने केंद्र सरकार पर एक्शन लेने में विफल होने का आरोप लगाते हुए अपना गुस्सा ज़ाहिर किया। कंगना ने लिखा- खून बहाने से रोकने के लिए कहने पर ममता सेना मेरे खिलाफ एक्शन ले रही है। बता दें, इंस्टाग्राम के ज़रिए नफ़रत फैलाने के आरोप को लेकर टीएमसी प्रवक्ता ने कंगना के खिलाफ पुलिस रिपोर्ट दर्ज करवायी है, जिसकी कॉपी उन्होंने ट्विटर पर शेयर की थी। कंगना पर समुदायों के बीच नफरत फैलाकर साम्प्रदायिक हिंसा के लिए उकसाने और मुख्यमंत्री की छवि खराब करने के आरोप हैं।

टीएमसी के प्रवक्ता ऋजु दत्ता ने ट्विटर से कंगना रनोट के बेदखल होने के बाद उनके खिलाफ नफरत फैलाने के आरोप में पुलिस रिपोर्ट दर्ज करवायी है। एफआईआर पर अब कंगना ने प्रतिक्रिया दी है और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के खिलाफ सख्त टिप्पणी की है। कंगना अब ट्विटर पर नहीं हैं, इसलिए अब सारा संवाद इंस्टाग्राम स्टोरी के जरिए कर रही हैं।

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहाँपुर, प्रधान संपादक अरुण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहाँपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहाँपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहाँपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक–सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहाँपुर होगा।